❀ श्रीराधासर्वेश्वरो जयति ❀

❀ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ❀

श्रीनिम्बार्कपादपीठाधीश्वर

श्री श्रीभट्टदेवाचार्यजी महाराज

की वाणी

श्री
युगल-शतक

सम्पादक :

रसिकमोहनशरण शास्त्री, जयकिशोर शरण

✻ प्राक्कथन ✻

समस्तनानाविधदेवतागणैर्विरञ्चिगंगाधरशारदाविभिः ।
मूर्धाभिवंद्यारुणपादपद्मां श्री श्रीहितां संततमानतोऽस्मि ।।

—श्री श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी

ब्रह्मा, शिव, शारदा एवं अन्य देव-देवियाँ सभी जिनके चरणारविन्द की सतत वन्दना करते हैं, ऐसी श्रीहितू सखी श्रीयमुना परिवेष्टित निजधाम श्रीवृन्दावन में नित्य-विहार-परायण श्रीप्रियालाल के प्रेम-रस-रंग से परिपूरित हो परिचर्य्या करती हुई सदैव संग विराजती हैं—

जै-जै श्रीहितु सहचरी, भरी प्रेम रस रंग ।
प्यारी-प्रीतम के सदा, रहत जु अनुदिन संग ।। (श्रीमहावाणी)

ममता की मूर्ति श्रीप्रियाजू अपनी परम प्रिय श्रीहितू सखी, जो 'कल्पविटप' की भाँति श्रीयुगलवर की मनोवांछा को पूर्ण करने में सदा संलग्न रहती है, के प्रति अपने अगाध एवं अत्यन्त उत्कृष्टतम अनुराग को अभिव्यक्त करती हुई कहती हैं—

सखी री ! सुनहुँ स्रवन दे बैंन ।
तू मेरी हितु सहचरी हिय की, तो बिन मोहिं सरैं न ।।
लागति है अति प्यारी मो कों, जैसे पलकनि नैंन ।
श्रीहरिप्रिया तोहि ते बिलसत, या सुख की बिलसैंन ।। (महा०स०सुख)

ऐसी श्रीहितू सखी जिस जीव पर भी अपनी कृपा-दृष्टि कर दे वह नित्य-निकुञ्ज-केलिजन्य सुख सहज ही प्राप्त कर लेता है यथा—

हितु सहचरी "निज-कृपा" करि, जासु तन चितवैं जबैं ।
नित्य बिमव बिलास कौ सुख, सहज पावैं सो तबैं ।। (महा०सि०सुख)

करुणानिधि श्रीनित्यकिशोरी किशोर की करुणा जब-जब जीवों के प्रति उमड़ती है तब-तब निज परिकर में से स्वेच्छानुसार किसी को भी इस अवनि पर अवतरित करते हैं। वे अपने आराध्य के आदेशानुसार परम गोप्य माधुर्योपासना रस-उदधि के स्वाति-घन-बिन्दु को वाणी-सिन्धु के रूप में उच्छलित कर पपिहारूपी प्रेम-पिपासु-प्रेमीजनों का पोषन कर जीव-जगत् को कृतार्थ करते हुए पुनः धाम को लौट जाते हैं।

करुणानिधि श्रीनित्यकिसोरी, करि अनुकंप कियौ आदेस ।
आई अग्रवति अलबेली, धरि बर इच्छा विग्रह बेस ।। (महा०सि०सुख)

दिव्य परिकर में ऐसे ही रसिक नरेश श्री श्रीभट्टदेवाचार्यजी थे जिनका सखी नाम हितुसहचरी था।

श्री श्रीभट्टदेवाचार्यजी : एक परिचय

आपके आविर्भाव एवं श्रीयुगलशतक के रचना काल के सन्दर्भ में विद्वान एवं समीक्षकों द्वारा "श्रीसर्वेश्वर" के विशेषाङ्क "श्रीभट्टदेवाचार्य एवं उनका युगल-शतक" में विस्तारपूर्वक समालोचना की गई है। गौड़ द्विज वंश के भूषन श्रीभट्टदेवाचार्यजी के पूर्वज हिसार (हरियाणा) के निवासी थे। परन्तु उनके माता-पिता उनके जन्म के पूर्व

ही ध्रुव टीला मथुरापुरी में निवास करने लगे थे। यहीं १४ वीं सदी में आपका जन्म हुआ। श्रीकेशवकाश्मीरी भट्टाचार्यजी मथुरा पधारे और यवनकाजी के अत्याचारों से बृजवासियों की रक्षा करने के उपरान्त ध्रुवटीला में निवास करने लगे। तब श्री श्रीभट्टजी उनके शिष्य हो गये। श्रीगुरुदेव के निकुञ्ज गमन के पश्चात् अपने त्याग, वैराग्य एवं भजन के प्रभाव के कारण आपने आचार्य गद्दी को सुशोभित किया था। श्रीनिम्बार्क मत परम्परा में ३४ वें आचार्य थे, इनके जन्मोत्सव की तिथि अगहन शुक्ल १२ एवं पाटोत्सव तिथि आश्विन शुक्ल २ मानी जाती है। श्रीयुगलशतक के कुछ पदों से स्पष्ट होता है कि आपकी भजन-स्थली श्रीवृन्दावन यमुना पुलिन स्थित वंशीवट रही उसके प्रति आपका अनन्य प्रेम युगलशतक में अनेक स्थलों पर अभिव्यंजित हैं यथा—

❀ श्रीभट जुग बंसीवट सेवत, मूरति बस सुखरासी ॥ ५ ॥

❀ जै श्रीभट बंसीवट तट निरखत, उठि उर हरष हिलौरें ॥९२॥

❀ बंसीवट तट जमुना जल में, निरखत चंचल झाँही ॥९०॥

❀ खेलत जहाँ-तहाँ वंसीवट, नंदनंदन वृषभानु किसोरी ॥५८॥

प्रकट रूप में आप श्रीवृन्दावन विलासी पियप्यारीजू के सुख-स्वरूप श्रीसर्वेश्वर-जू की परिचर्या करते हुए वंशीवट निकट विविध अन्तरंग लीलाओं का अहर्निश आस्वादन करते थे। आपका निवास ध्रुवक्षेत्र स्थित नारद टीला पर भी होने की मान्यता रही है। यहाँ आपके श्रीगुरुदेव, आपकी तथा आपके प्रधान शिष्य श्रीहरिव्यास-देवाचार्यजी की समाधियाँ विद्यमान हैं।

श्रीरंगदेवी वपु श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य ने श्रीराधाकृष्ण युगल-रसोपासना का निरूपण स्वरचित 'वेदान्तकामधेनु' (दशश्लोकी) 'प्रातः स्तवराज' आदि में सूत्रात्मक रूप से किया है। बाद के आचार्यों ने भी संस्कृत में ही ग्रन्थ रचना की। चौदहवीं सदी में श्री श्रीभट्टदेव ही ऐसे आचार्य हुए जिन्होंने सर्वप्रथम संस्कृतगर्भित निगूढ़ तत्त्व सखी-भाव समन्वित रसोपासना को अपनी सरस भावनाओं द्वारा ब्रजभाषा 'श्रीयुगलशतक' के रूप में अभिव्यक्त किया। ऐसी मान्यता है कि आपके द्वारा नित्यविहाररस से परिपूरित एक सौ शतक-काव्यों की रचना हुई थी। वे सभी शतक श्रीगुरुवर के समक्ष प्रस्तुत किये गये किन्तु कलिकाल में इस रस के अधिकारी न होने से उन्होंने सभी शतकों को श्रीयमुनाजी में विसर्जित करा दिया। एक युगलशतक के अतिरिक्त सभी जल में विलीन हो गये। अपने उपास्य की इच्छा जान 'युगलशतक' को उनके प्रसाद रूप में सुरक्षित कर लिया गया।

श्रीयुगल-शतक—

श्रीयुगलशतक छह सुखों में विभाजित है। सं० १८०० से पूर्व की कुछ प्रतियों में इस क्रम से भिन्न क्रम भी मिलता है। इन सुखों का विभाजन सम्भवतः सोलहवीं सदी में श्रीरूपरसिकदेव जी द्वारा किया गया जो उनके छप्पय से स्पष्ट होता है यथा—

छप्पय— दस पद हैं सिद्धान्त बीस-षट ब्रजलीला पद।
सेवा-सुख सोलह सहजसुख एकबीस हद॥
आठ सुरत इक ऊनबीस उछव सुख लहोये।
श्रीजुत श्रीभटदेव रच्यौ सत जुगल जु कहोये॥

निज भजन भाव रुचि तें किये इते भेद ये उर धरौ।
'रूपरसिक' सब संतजन अनुमोदन याकौ करौ॥

रस-भक्ति के लिए उपास्य के चार स्वरूप श्रीराधा, कृष्ण, सखी एवं वृन्दावन अनिवार्य हैं—"**प्रिया शक्ति अह्लादिनि पिय आनंद स्वरूप। तन वृंदावन जगमगै इच्छा सखी अनूप॥**" (महा० सि० सुख) इन चतुर्विध तत्त्वों में श्रीवृन्दावन श्रीश्यामाश्याम के नित्यविहार का परम आधार है। श्रीधाम के परिचय, उपासना एवं कृपा के अभाव में साधक के लिए रसोपासना की कल्पना भी सम्भव नहीं है। श्रीभट्टदेवाचार्य जी द्वारा 'सिद्धान्त-सुख' में धाम की अनन्यता को अभिव्यक्त करते हुए 'आनन्द-मूल' श्रीवृन्दावन को 'परम-उदारता' एवं 'शरणागति' का परिचय दिया है। जहाँ-जहाँ भी शरणागति का प्रसंग आता है उन सभी में कुछ न कुछ हेतु अवश्य दृष्टिगोचर होता है किन्तु इन सबसे विलक्षण निर्हेतुकी शरणागति वृन्दावन की है, जिसका दिग्दर्शन आपने प्रस्तुत पद में कराया है—

जै-जै वृंदावन आनंद-मूल।
नाम लेत पावत जु प्रेम रति, जुगल किसोर देत निज कूल॥
सरन आय पाय राधाधव, मिटी अनेक जनम की भूल।
ऐसें जानि वृंदावन श्रीभट, रज पै वारि कोटि मय तूल॥३॥

धाम के प्रति अनन्य निष्ठा के कारण आपने श्रीवृन्दावन की सीमा से बाहर कोटि चिन्तामणियों की तो क्या चलाई श्रीहरि की ओर भी दृष्टिपात न करने का उपदेश दिया है तथा कहा है कि श्रीधाम की धूरि से सर्वांग धूसरित बना रहे केवल यही अभिलाषा उर में रखनी चाहिए—

रे मन वृंदाबिपिन निहार।
जद्यपि मिलै कोटि चिंतामनि, तदपि न हाथ पसार॥
बिपिनराज सीमा के बाहिर, हरिहू को न निहार।
जै श्रीभट्ट धूरि धूसर तन, यह आसा उर धार॥

यद्यपि ब्रज-भूमि की सकल सम्पत्ति मोहनी है किन्तु उसमें भी श्रीवृन्दाटवी देह में प्राण की भाँति महा मोहनी है। जहाँ प्रेमियों का मन सहज ही आकृष्ट हो जाता है अथवा बिपिनराज जिस बड़भागी के मन को बरबस हरण कर लें वह विविध-निकुञ्ज लीला परायण श्रीयुगलस्वरूप-सुधासिन्धु, छवि तथा नाम में लवलीन हो जाता है। रसिकराज श्री श्यामाश्याम उसे निजमहल की टहल देकर सदा-सदा के लिए निहाल कर देते हैं यथा—

ब्रजभूमि मोहनी मैं जानी।
मोहनि कुंज मोहन वृंदावन, मोहन जमुना पानी॥४॥ (सि०सुख)
जाकौ मन वृंदाबिपिन हरयौ।
स्यामा-स्याम सरूप सरोवर, परि स्वारथ बिसरयौ॥
निरखि निकुंज-पुंज छवि राधे कृष्ण नाम उर धरयौ।
जै श्रीभट राधे रसिकराय, ताहि सर्बस दै निबरयौ॥२॥

सन्त समाज को सम्बोधित करते हुए श्रीभट्टदेवाचार्यजी ने निज सेव्यमान को स्पष्ट करते हुए कहा है—

❀ संतो, सेव्य हमारे श्रीपिय प्यारे, वृंदाबिपिन बिलासी।
मत्त प्रनै बस सदा एकरस, बिबिध निकुंज निवासी ॥ ५॥
❀ सेऊँ श्रीवृंदाबिपिन बिलास।
जहाँ जुगल मिलि मंगल मूरति, करत निरंतर बास ॥१०॥

श्रीनिकुञ्जविहारी एवं व्रजविहारी में तत्त्वतः अभेदता को स्वीकार करते हुए युगलशतक में 'व्रजलीलासुख' का गान तो किया है परन्तु एक निराले ही ढंग से जिसमें आपने नित्यविहार-रस का आश्रय कदापि नहीं छोड़ा यथा—

भानु नंद सौं मिले धाय कैं अंक सो अंक लगावैं।
श्रीभट निकट निहारि राधिका, स्याम नैंन सचु पावैं ॥६६॥ (उ०सुख)

'सेवासुख' में अष्टयाम सेवा का उल्लेख है। भोर में श्रीलाल-ललना मोहनमहल मध्य शैया पर उठकर परस्पर शृंगार करते हैं। श्रीकिशोरीजू अपने वसन सम्भालती हैं। इस अनुपम झाँकी का आस्वादन आपने प्रस्तुत पदों में कराया है—

❀ स्यामा-स्याम सेज उठि बैठे, अरस परस दोउ करत सिंगार।
उन पहिरी वाकी मोतिन माला, उन पहरचौ वाको नवसर हार ॥
लटपटे पेंच सँवारति स्यामा, अलक सँवारत नंदकुमार ॥३७॥ (सेवासुख)
❀ उठत भोर लालजू के सँग तें, कंचुकि कसति राधिका प्यारी।
घिसि-घिसि परत नील पट सिर तें, ससि बदनी नव जौवन वारी ॥३८॥

'सहजसुख' में श्रीराधामाधवजू के परस्पर सहज-स्वभाविक प्रेम-रस-पयोधि एवं उनकी रूप-सौन्दर्य-माधुरी का बड़ा ही मार्मिक एवं अनुपमेय गान प्रस्तुत किया गया है। अंगद्युति एवं मुख-चन्द्र-छटा में चन्द्र चकोरवत् परस्पर आसक्त श्रीनवलकिशोर के प्रेमरस-बन्धन में बँधा आचार्यश्री का मन क्या कभी छूट सकता है यथा—

❀ अंग-अंग द्युति माधुरी, बिबि मुख चंद चकोर।
श्रीभट मुघट दृष्टिन अटक, नटवर नवल किसोर ॥५३॥
❀ भुवन चतुर्दस की सबै, सुंदरता सिरमौर।
सुंदर बर जोरी बनी, बृंदाबन निज ठौर ॥५८॥
❀ नवसिष सुषमा के दोउ, रतनागर रसिकेस।
अद्भुत राधामाधवी, जोरी सहज सुदेस ॥५९॥

अखिल लोकाधिपति श्रीकृष्ण सबके आराध्य हैं परन्तु आपकी भी आराध्या 'श्रीराधा' हैं। 'प्रिया-प्रेम' के वशीभूत होकर लालजी निरन्तर राधा नाम का ही गान करते रहते हैं यथा— मोहन राधे-राधे बैंन बोलैं।
प्रीति रीति रस बस नागरि, हरि लियौ प्रेम के मोलैं ॥६८॥

प्रियाजू के चरणारविंद की सेवा ही प्रियतम को परम आनन्द प्रदान करने वाली है— प्यारीजू के चरन पखोटत मोहन ॥७६॥

प्यारीजू के रूपलावण्यसिन्धु की सुमधुर तरंगों में तरंगायित प्यारे की प्रेम-जन्य-दशा का दर्शन कराते हुए आप कहते हैं—

प्यारीजू के प्यारौ रूप बिमोहित।
करत पलक पाँवड़े बिहारी, धरत चरन भामिनी जित ॥६६॥

इसी सुख में आपने अलौकिक दाम्पत्य प्रेम की परावधि जोरी नवलकिशोर-किशोरीजू जिनका एक पल के लिए भी विछोह सम्भव नहीं है की अति उत्कृष्ट अभिन्न छवि का दर्शन कराते हुए कहा है—

प्यारी तन स्याम स्यामा तन प्यारी ।
प्रतिबिंबित तन अरस परस दोउ, एक पलक दिखियत नहिं न्यारी ॥
ज्यौं दरपन में नैंन नैंन में, नैंन सहित दरपन दिखवारी ।६०।

मेघ की घटा, चपला की छटा व इन्द्रधनुष ये तीनों जिस प्रकार एक ही स्थान तथा समय में मिलकर एकाकार दिखाई देते हैं, ठीक वैसी ही अभिन्न छवि श्रीश्यामा-श्याम में छाई हुई है यथा—

नील निचोल पीत पट कें तट, मोहन मुकुट मनोहर राजें ।
घटा छटा आखंडल-कोदंड, दोउ तन एक देत छबि छाजें ॥५७॥

नवनिकुञ्ज में रसपुञ्ज श्रीबिहारी-बिहारिनजू की परस्पर महामधुर दिव्याति-दिव्य रसमयी चेष्टाओं के उत्कृष्ट शिखर-प्रगाढ़ आश्लेषयुक्त सुरतकेलि-रस-सरिता को आपने **'सुरतसुख'** में प्रवाहित किया है यथा—

दोउ मिलि करत भांवती बतियाँ ।
मदन गोपाल कुंवरि राधे के, नखमनि अंक लिखत उर छतियाँ ॥
तैंतिय छिटकि रही उजियारी, पूरनचंद सरद की रतियाँ ।
केलि रूपिनी जमुना श्रीभट, बृंदावन फूल्यौ बहु भतियाँ ॥७५॥

* रस की रेलि बेलि अति बाढ़ी ।७८।

* राजत रसिक अंक अंकित सी, लसी स्याम संग गोरी ॥८१॥

'उत्सवसुख' में ऋतुओं के अनुसार लाल-ललना को लाड़-लड़ाते हुए विविध सुमधुर लीलाओं का गान किया है। वसन्तोत्सव में श्रीभट्टदेवजी ने सकल वृन्दावन में नव-बसन्त-बहार को बिखेरते हुए कहा है—

नव किसोर नव नागरी, नव सब सौंज र साज ।
नव बृंदावन नव कुसुम, नव बसंत रितु-राज ॥८३॥

इस प्रकार सम्पूर्ण युगलशतक में रूप-सौन्दर्य, प्रेम-सुधारस एवं लीला व धाम की ललित छवि, शब्दों की कोमलता अलंकारों द्वारा वर्ण-वर्ण में परिलक्षित होती है और उसे उत्कृष्ट काव्यकृति बना देती है।

प्रस्तुत युगलशतक के सम्पादन एवं पाठ संशोधन में जिन प्राचीन हस्तलिखित प्रतियों एवं पूर्व के प्रकाशनों का सहारा लिया गया उनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

(१) यह प्रति श्रीनिम्बार्काचार्य पीठ सलेमाबाद से प्राप्त वि० सं० १८३६ मीती वैशाख वदि १२ की लिखी गई है। श्रीयुगलशतक का क्रम-पाठ-श्रीरूपरसिकदेवजी द्वारा निर्धारित रीति के अनुसार है।

(२) यह प्रति **'श्रीजी'** मन्दिर के पुस्तकालय से प्राप्त हुई है। इसमें लिपिकाल नहीं दिया गया, सम्भवत: यह प्रति २५० वर्ष पुरानी प्रतीत होती है। इसका क्रम-पाठ

भी पूर्व प्रति के अनुसार है। युगलशतक के प्रारम्भ में श्रीमहावाणी उत्साहसुख का मंगलाचरण श्लोक दिया गया है।

(३) यह प्रति बाबा श्रीछविलेशरणजी से प्राप्त (गुटका) है। इस युगलशतक के साथ श्रीरूपरसिकजी कृत ब्रह्मउत्सवमणिमाल तथा नित्य-विहार पदावलि भी लिपिबद्ध हैं। इसमें लिपिकाल नहीं दिया है।

(४) यह प्रति भी श्रीछविलेशरणजी से प्राप्त संवत् १९६३ ज्येष्ठ १० शनिवार को श्रीराधेश्यामजी द्वारा लिखी गई है।

(५) यह प्रति बाबा श्रीप्रेमदासजी से प्राप्त हुई है। जिसमें सं० व लिपिकार का उल्लेख नहीं दिया गया है।

(६) यह प्रति वि० सं० २००९ में अधिकारी श्रीव्रजवल्लभशरणजी द्वारा सम्पादित व श्रीव्रजविहारीशरणजी द्वारा प्रकाशित है।

(७) इस प्रति को वि० सं० में लाला श्री लक्ष्मीनारायण ने प्रकाशित कराया था।

(८) यह प्रति श्रीगिरधारीलाल पालीवाल द्वारा वि० सं० २०२६ में प्रकाशित है।

(९) श्रीभट्टदेवाचार्य और उनका सम्प्रदाय "श्रीसर्वेश्वर' विशेषाङ्क में श्री प्रेमनारायणजी श्रीवास्तव द्वारा संशोधित युगलशतक सटीक का प्रकाशन वि० सं० २०३० में हुआ।

(१०) यह बाबा श्रीकुञ्जविहारीशरणजी कृत वि०सं० २०३९ में मूल सहित टीका है।

'श्रीजी' मन्दिर द्वारा प्रस्तुत युगलशतक के चतुर्थ संस्करण में उक्त प्रतियों के आधार पर कहीं-कहीं पाठभेद किया है। मेरी अल्पबुद्धि तथा कम्पोजीटरों के भ्रम से जो भूल रह गई हों उसके लिए रसिक, विद्वान, पाठकवृन्द से क्षमा प्रार्थी हूँ। पाठ संशोधन एवं सम्पादन में प्रो० गोविन्द शर्माजी का विशेष सहयोग रहा तथा इस परम पुनीत सेवा में हाथ बटाने वाले सभी भक्तों के प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करते हुए शुभकामना करता हूँ कि श्रीराधा-सर्वेश्वरजू के चरणारविन्द में उनकी प्रगाढ़-प्रीति हो।

❀ जय-जय श्रीराधे ❀

रसिकचरणरजाकांक्षी—
जयकिशोरशरण

निकुञ्जविहारी श्रीश्यामाश्याम

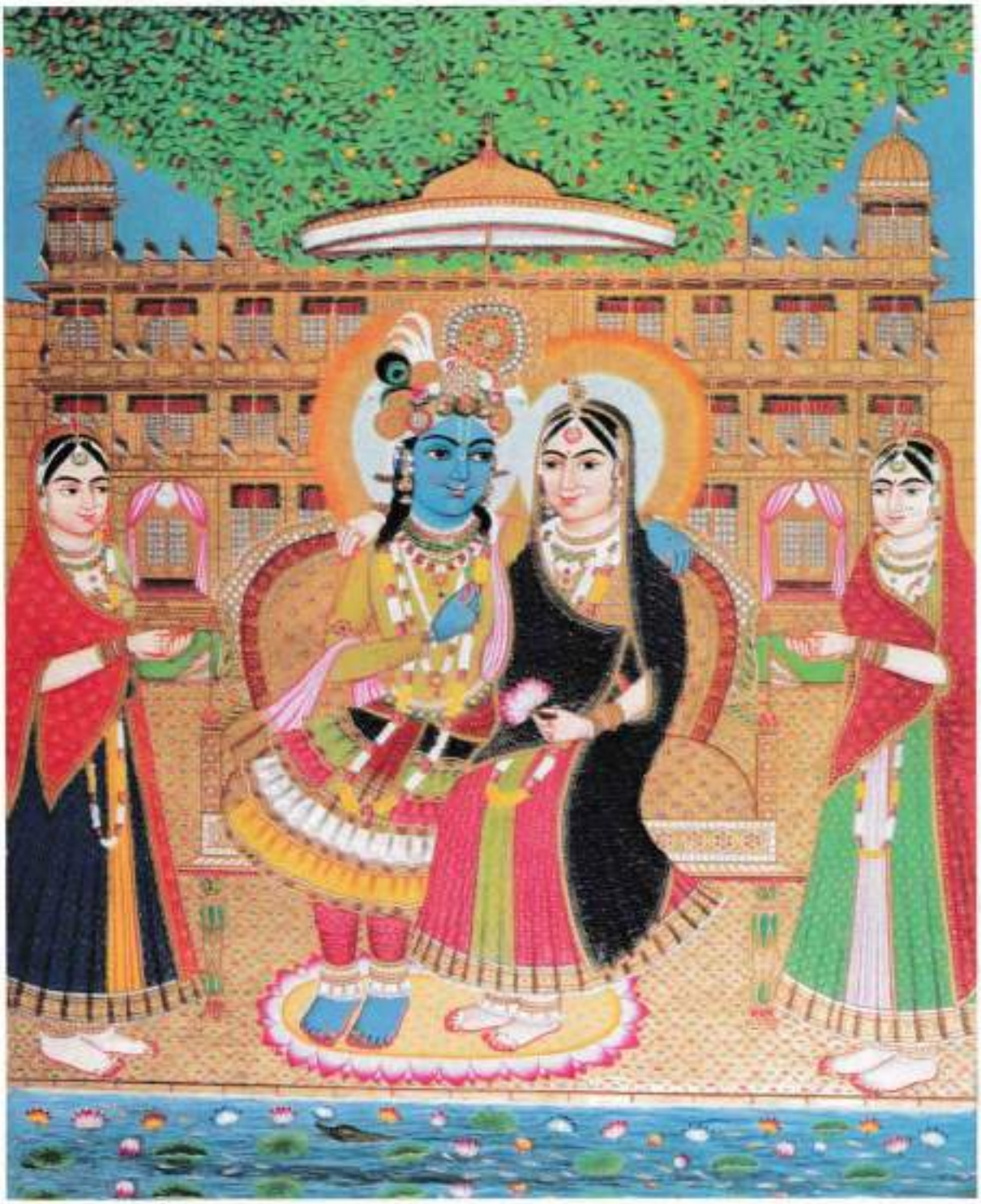

वृन्दावन-कलानाथौ हृदयानन्द-वर्द्धनौ।
सुखदौ राधिकाकृष्णौ भजेऽहं कुञ्जगामिनौ॥

❀ प्रशस्ति पुञ्ज ❀

सन्त महानुभावों की दृष्टि में श्री श्रीभट्टदेवाचार्यजी

समस्तनानाविधदेवतागणैर्विरञ्चिगंगाधरशारदादिभिः ।
मूर्धाभिवंद्यारुणपादपद्मां, श्रीश्रीहितां संततमानतोऽस्मि ॥

—श्री श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी

जे नर आवैं सरन ताप त्रय तिनके हरहीं ।
तत्वदर्सी ते होंहि हस्त, जा मस्तक धरहीं ॥
गुननिधि रसिक प्रवीन, भक्ति दसधा कौ आगर ।
श्रीराधाकृष्ण स्वरूप ललित, लीला रस सागर ॥
कृपा दृष्टि संतन सुखद, भक्त भूप द्विजवंस वर ।
कल्प विटप श्रीभट प्रगट, कलि कल्मष दुष दूरिकर ॥

—श्री रूपरसिकदेवाचार्यजी

मधुर भाव संमिलित ललित, लीला सुबलित छबि ।
निरषत हरषत हृदै प्रेम, बरषत सुकलित कवि ॥
भव निस्तारन हेत देत, दृढ़ भक्ति सबनि नित ।
जासु सुजस ससि उदै हरत, अति तम भ्रम स्रम चित ॥
आनंदकंद श्रीनंदसुत श्रीवृषभानुसुता भजन ।
श्रीभट सुभट प्रगट्यौ अघट, रस रसिकन मनमोद घन ॥

—श्रीनाभादासजी

नव रस रस परबीन, गोप लीला बिस्तारी ।
मन बच क्रम उर ध्यान, नमो प्रीतम बस प्यारी ॥
नित प्रति रास-बिलास, ज्ञान गिरधर गुन गाता ।
मीन नीर ज्यूँ ब्रित देह, कुलकित तज नाता ॥

कौन जगत में कौ वन है, लवलीन भये चित वित हर ।
अघट प्रेम श्रीभट सुजस, नवधा आगर पुन्य धर ॥

—श्रीद्यालबालजी

बर्द्धमान श्रीभट अरु गंगल, ब्रज वृन्दावन गायौ ।
करि प्रतीति सर्वोपरि जान्यौ, ताते चित्त लगायौ ॥

—श्रीध्रुवदासजी

तिन प्रसाद श्रीभट लही, निरवधि रस की रासि ।
जो संपति परति न कही, दंपति भले उपासि ॥

—श्रीघनानन्दजी

ध्यान धारि कविता रचैं, श्रीभटजु तेहि वेर ।
तब याही विधि जुगल इन, दरसे प्रेम उरेर ॥

—श्रीसुन्दरि कुँवरिजी

नमो जयति श्रीभट रिषिराज ।
भक्तराज अरु रसिक राज सुभ,
श्रीवृन्दाबन रस की पाज ॥
स्यामा-स्याम निकुंज केलि गुन,
मत्त रहत मिलि रसिक समाज ।
रंगादिक सँग हितू सहेली,
कलि प्रगटे परिकर जुत साज ॥
श्रीगोविंदसरन हठि हिय धरि,
ये ही सबके सारन काज ।
धीरज धारि चरन रज सिर पर,
भव-सागर कौ तिरन जहाज ॥

—श्रीगोविन्दशरणदेवाचार्यजी

❀ श्री श्रीभट्टदेवाचार्यजी की बधाई ❀

❀ पद ❀

नमो नमो जै श्रीभट देव ।
रसिक अनन्य जुगल पद सेवी, जानत श्रीवृन्दावन भेव ॥
राधावर बिन आन न जानत, नाम रटैं निसदिन यह टेव ।
प्रेम रंग नागर सुख सागर, श्रीगुरु भक्ति सिरोमनि सेव ॥१॥

❀ पद ❀

श्रीभट जनम लियो भुव माहीं ।
नवल नवेली हितू सहेली, जग हित आदि गिरा प्रगटाहीं ॥
रसिक जनन कौं रस अँचवायौ, लीला बिबिध प्रकासी ।
साधन सिद्धि वस्तु दरसाई, तिहिं लखि रंग महल ह्वै बासी ॥
हंस बंस निज सुजस बढ़ायौ, आप रूप भये (श्री) हरिव्यास ।
दंपति केलि कुंज सुख गायौ, गोविंदसरन की पुजई आस ॥२॥

❀ दोहा ❀

आस्विन[1] सुकल सुदोज तिथि, ग्रह नक्षत्र सुभ साज ।
प्रगटे श्री श्रीभट जू, सब रसिकन सिरताज ॥
श्रीकास्मीर प्रसाद तें, पायो तत्व अगाध ।
जुगल रहस्य बरनन करी, स्मृति पुरान सब साध ॥

❀ मंगल ❀

जै जै श्रीभटदेव रसिक रस भूषणा ।
प्रगटे आनंद कंद मधुर रस पूषणा ॥
लीला सरस निकुंज रहस्य रस गायकैं ।
किये सनाथ अनाथ नाम सुनायकैं ॥
सुनाय कें जस जुगल रस, माधुर्य लीला विस्तरी ।
रसिक जन हित बढ़्यौ अति, उत्साह सुख निधि की घरी ॥
गावौ मंगलचार सजनी, प्रणत प्राण पियूषणा ।
जै जै श्रीभटदेव रसिक रस भूषणा ॥१॥

पाठान्तर—१. गोप मास (अगहन) द्वादसि सु तिथि, (प्राकट्य तिथि)

जै जै श्रीभट देव जुगल हितु सहचरी ।
प्रगट होय कलि जीव परम करुना करी ॥
श्रीवृन्दाबन वास प्रीति सोइ दृढ़ धरी ।
स्यामा-स्याम पद कंज लुब्ध संग्रहकरी ॥
करी संग्रह उत्साह कौतिक, परम चित के चाव सौं ।
आज कौ सो दिवस सजनी, मिले जिय के भाव सौं ॥
विधना आज को (सुभ) घरी, प्रेम आनंदित करी ।
जै जै श्रीभटदेव जुगल हितु सहचरी ॥२॥

जै जै श्रीभटदेव जुगल जस विस्तरौ ।
रसिक जनन आनंद सिंधु रस मन भरौ ॥
नर नारी अति उत्साह कौतिक करैं धायकैं ।
लै दही हरद मिलाय (सु)छिरकैं आयकैं ॥
आयकैं अति भाव तिनको, प्रेम नहिं बरनौं परैं ।
करैं नृत्य गीत उमाह तनमन, वारि मुष छबि हिय धरैं ॥
कहि सकैं को आनंद जेतो, सबनि के जिय नित भरौ ।
जै जै श्रीभटदेव जुगल जस विस्तरौ ॥३॥

जै जै श्रीभटदेव रसिक चूड़ामनी ।
बिबि गुन गाय रिझाय भये निधि के धनी ॥
किये अपनाय दृढ़ाय प्रेम सरसाय कैं ।
जीव अमित भये पार चरन रज पाय कैं ॥
पाय कै सुख सिंधु बाढ़्यौ, प्रताप जग जस छै रह्यौ ।
प्रेम भक्ति प्रवाह उमग्यौ, भाग जाके तिन लह्यौ ॥
ऐसे रसिक अनन्य[1] जग में, 'कृष्ण-अली' के धनी ।
जै जै श्रीभटदेव रसिक चूड़ामनी ॥४॥३॥

पाठान्तर—१. नरेस ।

श्रीश्रीभट्टदेवाचार्य विरचित—

❀ श्रीयुगल-शतक ❀

❀ सिद्धान्त-सुख ❀

❀ आभास दोहा ❀

चरन कमल की दीजिये, सेवा सहज रसाल ।
घर जायौ मुहि जानिकें, चेरौ मदन गुपाल ॥

पद (इकताल, राग-गौरी)

मदनगुपाल सरन तेरी आयौ ।
चरन कमल की सेवा दीजै,
चेरौ करि राषौ घर जायौ ॥
धनि-धनि मात-पिता सुत बंधू,
धनि जननी जिन गोद खिलायौ ।
धनि-धनि चरन चलत तीरथ कौं,
धनि गुरु जिन हरि नाम सुनायौ ॥
जे नर विमुष भये गोविंद सौं,
जनम अनेक महा दुष पायौ ।
श्रीभट के प्रभु दियौ अभै पद,
जम डरप्यौ जब दास कहायौ ॥ १ ॥

❀ दोहा ❀

स्यामा-स्याम सरूप सर, परि स्वारथ बिसरयौ जु ।
जाकौ मन आनंद घन, बृन्दाबिपिन हरयौ जु ॥

पद (राग-गौरी)

जाकौ मन वृन्दाविपिन हरयौ।
स्यामा-स्याम सरूप सरोवर, परि स्वारथ विसरयौ॥
निरषि निकुंज-पुंज छवि राधे, कृष्ण नाम उर धरयौ।
जै श्रीभट राधे रसिकराय, ताहि सर्वस दै निवरयौ॥ २॥

* दोहा *

जाकौ नामहि लेत पन, देत जुगल निज कूल।
जै-जै वृन्दावन जु है, महाऽऽनंद कौ मूल॥

* पद *

जै जै वृन्दावन आनंद मूल।
नाम लेत पावत जु प्रनै रति, जुगल किसोर देत निज कूल॥
सरन आये पाये राधाधव, मिटी अनेक जनम की भूल।
ऐसैं जानि वृन्दावन श्रीभट, रज पै वारि कोटि मध तूल॥ ३॥

* दोहा *

मोहनि ब्रज बन भूमि सब, मोहन सहज समाज।
मोहनि जमुना कुँज जहँ, बिहरत हैं जुवराज॥

पद-सारंग (इकताल)

ब्रजभूमि मोहनी मैं जानी।
मोहनि कुंज मोहन वृन्दावन, मोहन जमुना पानी॥
मोहनि नारि सकल गोकुल की, बोलत मोहनि[1] बानी।
श्रीभट के प्रभु मोहन नागर, मोहनि राधा रानी॥ ४॥

पाठान्तर—१. अमृत।

* दोहा *

सेव्य हमारे हैं सदा, वृन्दाबिपिन बिलास ।
नंदनँदन वृषभानुजा, चरन अनन्य उपास ॥

* पद *

संतो, सेव्य हमारे श्रीपिया[1] प्यारे, वृन्दाबिपिन बिलासी ।
नंदनँदन वृषभानुनंदनी, चरन अनन्य उपासी ॥
मत्त प्रनै बस सदा एकरस, बिबिध निकुंज निवासी ।
जै श्रीभट जुग बंशीबट सेवत, मूरति सब सुपरासी ॥ ५ ॥

* दोहा *

आन कहैं आनै न उर, हरि-गुरु सों रति होइ ।
सुषनिधि स्यामा-स्याम के, पद पावै भल सोइ ॥

पद—(इकताल)

स्यामा-स्याम पद पावै सोई ।
मन-बच-क्रम करि सदा निरंतर,
हरि - गुरु - पद - पंकज रति होई ॥
नंदसुवन वृषभानुसुता पद,
भजै तजै मन आनै जोई ।
श्रीभट अटकि रहै स्वामी पन,
आन कहैं मानै सब छोई ॥ ६ ॥

* दोहा *

जनम-जनम जिनके सदा, हम चाकर निस भोर ।
त्रिभुवन पोषन सुधाकर, ठाकुर जुगल किसोर ॥

पाठान्तर—२. श्रीप्रिया ।

पद—(इकताल)

जुगल किसोर हमारे ठाकुर ।
सदा सर्वदा हम जिनके हैं, जनम-जनम घर जाये चाकर ॥
चूक परे परिहरै न कबही[1], सबही भाँति दया के आकर ।
जै श्रीभट्ट प्रगट त्रिभुवन में, प्रनतन पोषन परम सुधाकर ॥ ७ ॥

* दोहा *

मन सुढाल में ढरौ अरु, जिय जु परौ जस जाल ।
आलस उपजौ आन सों, लालस पद जुग लाल ॥

पद—(इकताल)

निस दिन लगी[2] रहौ यह लालस ।
स्यामा-स्याम चरन की सेवा,
बिना आन सों उपजौ आलस ॥
कहत सुनाय सु मन बच क्रम करि,
उरझि रहौ जिय जुग-जुग जालस ।
जै श्रीभट्ट अघट घटना में,
ढरौ सदा मन मोर सुढालस ॥ ८ ॥

* दोहा *

अनायास सहजहिं जु तिहिं, पाई सुकृत सुमाल ।
लग लगाय जग जिहिं जपे, मन बच राधा लाल ॥

पद—(इकताल)

मन बच राधा लाल जपे जिन ।
अनायास सहजहिं या जग में,
सकल सुकृत फल लाभ लह्यो तिन ॥

पाठान्तर—१. चूक परे परिहरहि न कबहूँ २. लगिय ।

जप तप तीरथ नेम पुन्य ब्रत,
सुभ साधन आराधन ही बिन ।
जै श्रीभट अति उतकट जाकी,
महिमा अपरंपार अगम गिन ॥ ९ ॥

* दोहा *

जहाँ जुगल मंगलमयी, करत निरंतर बास ।
सेऊँ सो सुप रूप श्री, वृन्दाबिपिन बिलास ॥

पद—(इकताल, राग-सारंग)

सेऊँ श्रीवृन्दाबिपिन बिलास ।
जहाँ जुगल मिलि मंगल मूरति, करत निरंतर बास ॥
प्रेम-प्रवाह रसिक जन प्यारे, कबहुँ न छाँड़त पास ।
कहा कहौं भाग की श्रीभट, राधाकृष्ण रस चास १०॥

॥ इति श्रीआदिवाणी युगलशतक सिद्धान्त-सुख सम्पूर्णम् ॥

* दोहा *

कहा करौं मन हरयौ हरि, ललित बजाई भोर।
स्रवननि सुनि जागी अरी, या मुरली की घोर॥

पद—(राग-विभास, ताल-चम्पक)

स्रवननि सुनि जागी अरी, या मुरली की घोर।
कहा (री) करौं मन हरयौ साँवरे, ललित बजाई भोर॥
रह्यौ न परै चटपटी लागी, बिन देखे (नागर) नंद किसोर।
(जै) श्रीभट हठ रह्यौ नागरि कौ, सुरति धरी हरि ओर॥११॥

* दोहा *

तनक न धीरज धरि सकै, सुनि धुनि होत अधीन।
बंसी बनसी लाल की, बेधन कौं मन-मीन॥

पद—(राग-बिलावल, इकताल)

बंसी त्रिभंगी लाल की, मन मीन की बनसी।
कहा अंतर घर दुरि रहैं, छई मूरति घनसी॥
हरि देखे बिन क्यौं रहौं, धीरज नहिं तनसी।
जै श्रीभट हरि-रस बस भई, सुनि धुनि नेक भनसी॥१२॥

* दोहा *

कहि जसुमति सों छाक दै, जाऊँ चलि तिहिं ओर।
कैसें हरि देखे बिना, राखौं री तन मोर॥

पद—(राग-सारंग, इकताल)

कैसें हरि देषे बिना, राषौं री तन मोर ।
गोचारण गोपाल गये, लै मेरौ चित चोर ॥
कहि जसुमति सों छाक दै, कब कौ भयो भोर ।
(जै) श्रीभट हरि देषन चली, जासों लागी डोर ॥१३॥

* दोहा *

घृत-पक बिंजन मोदक, मेवा मधुर रसाल ।
हाथ जिमाऊँ पाऊँ जो, कुंजनि में दोउ लाल ॥

पद—(राग-सारंग, इकताल)

बैठे लाल कुंजनि में जो पाऊँ ।
स्यामा-स्याम भाँवती जोरी, अपने हाथ जिमाऊँ ॥
घृत-पक बिंजन मोदक मेवा, रुचि सों भोग लगाऊँ ।
सषिन सहित जेवैं पिय-प्यारी, हरषि-हरषि गुन गाऊँ ॥
चंदन चरचि पुहुप की माला, निरषि-निरषि पहिराऊँ ।
श्रीभट देत पान की बीरी, जुगल चरन चित लाऊँ ॥१४॥

* दोहा *

मेरे मन की अघटना, के तुम जानन हार ।
श्रीराधे नँदनंद बलि, चरन दिषाये चारु ।

पद—(राग-सारंग, इकताल)

बलि-बलि श्रीराधे नँदनंदना ।
मेरे मन की अमित अघटना, को जानै तुम बिना ॥
भलेइ चारु चरन दरसाये, ढूँढति फिरी हौं वृन्दाबना ।
जै श्रीभट स्यामा-स्याम रूप पै, निवछावरि तन मना ॥१५॥

* दोहा *

सूँघत सौरभ कमल कर,[1] अति रति प्यारी पीय ।
बैठे बनि ठनि कुँज बिच,[2] मैं बलिहारि जु लीय ॥

पद—(राग-सारंग इकताल)

बैठे दोउ कुंज में बलिहारी[3] ।
नंदकुँवर अलबेलौ नागर, श्रीवृषभानु दुलारी ॥
सूँघत सौरभ लिये कमल कर,[4] रति रस प्रीतम प्यारी ।
जै श्रीभट्ट गौर साँवर मुष, लषि सषियाँ सब वारी ॥१६॥

* दोहा *

कुंज-महल सुष पुंज में, भोजन विविध रसाल ।
श्रीराधा रस-बस भये, जेंमत लाल गुपाल ॥

पद—राग-सारंग, (तिताल)

मिलि कुंजमहल गोपाल लाल,
प्यारौ (श्री) राधा रस बस जेवें ।
सहचरी सौंज रची सब विधि सौं,
हरि नेह नयन सौं भेवें[5] ॥
प्यारी के नैंन-निदेस लेप लषि,
मुष देषत गरसा लेवें ।
जै श्रीभट भट्ट कटाच्छ करन सौं,
जुगल सरूप सुधा सेवें ॥१७॥

* दोहा *

सव्य अंग वृषभानुजा, चहुँ दिसि गोपी-माल ।
जै-जै कहि करि कीजियै, आरति श्रीगोपाल ॥

पाठान्तर—१. करन कमल सूंघत सुरभि २. विवि, में ३. बैठे कुंज में बलिहारी, मिलि बैठे कुंज में, मैं बलिहारी । ४. करन कमल सूंघत सुरभि अति, ५. हरि नेह नैंनन सों भेवें, हरि नैंन नेह निधि सों भेवें ।

पद–(राग-सारंग, इकताल)

जै-जै आरती श्रीगोपाल की ।
आनँदकंद सकल सुख सागर, नवनागर[1] नँदलाल की ॥
सव्य अंग वृषभानुनंदनी, चहुँ दिसि गोपी-माल की ।
(जै) श्रीभट वार-वार वलिहारी, राधा नामनि वाल की ॥१८॥

* दोहा *

रंग रँगीले गात के, संग वराती ग्वाल ।
दूलह रूप अनूप ह्वै, नित विहरत नँदलाल ॥

पद—(राग-विहागरौ, इकताल)

लषि[2] आली नित विहरत नँदलाल ।
रंग रँगीले अँग-अँग कोमल, संग वराती ग्वाल ॥
दूलह श्रीव्रजराज लाडिलौ, दुलहिन राधा वाल ।
जै श्रीभट वल्लवी जुगल के, गावत[3] गीत रसाल ॥१९॥

* दोहा *

संझा गोरज उड़नि में, छवि पावत गोपाल ।
श्रीभट मानौं व्याहि कैं, घर आये नँदलाल ॥

पद—(राग-गौरी, इकताल)

गोपाल लाल दूलह ग्वाल वराती ।
गौवन आगे सषिन जूथ में, राधा दुलहिन लाल गवाती ॥
दुंदुभि दूध दुहन की वाजी, राजी (सब) गोप सजाती ।
आरती पलक नेह-जल मोती, श्रीभट रूप पिवाती ॥२०॥

पाठान्तर—१. राधावर २. लषे ३. गावत मंगल गाल, मंगल गाल रसाल ।

* दोहा *

कनक कटोरैं डारि नग, पगे प्रेम-रस जाल ।
पै पीवत कै षेलहीं, द्यूत षेल दोउ लाल ॥

पद—(राग-केदारौ इकताल)

पै पीवत मानौ द्यूत षेल ।
बिलसत लाल-लड़ैती दोऊ,
अति अलबेली केलि की रेल ॥
स्यामा कह्यौ स्याम सौं नागर,
देषि दूध कैसौ कर मेल ।
श्रीभट डारि कटोरै नग जब,
झपटा झपटि भई बहु झेल ॥२१॥

* दोहा *

चरन-चरन पर लकुट कर, धरैं कच्छ तर रंग ।
मुकट चटक छबि लटक लषि, बनै जु ललित त्रिभंग ॥

पद—(राग-बिहागरौ, इकताल)

बनै बन ललित त्रिभंग बिहारी ।
बंसी धुनि मनु बनसी लागी, आईं गोप कुमारी ॥
अरप्यौ चारू चरन पद ऊपर, लकुट कच्छ तर धारी ।
श्रीभट मुकुट चटक लटकनि में, अटकि रहीपिय प्यारी ॥२२॥

* दोहा *

बहुत रूप धरि हरि प्रिया, मनरंजन रस हेत ।
मनमथ मनमोहन मिथुन, मंडल मधि छबि देत ॥

पद—(राग-बिहागरौ, इकताल)

मंडल मधि बिमल जुगल भल सोहैं ।
करत बिहार बिहारी प्यारी, मार कोटि मन मोहैं ॥
बहुत रूप धृत[1] सब मनरंजन, इक प्रति अँगना दोहैं ।
मंडलाकार अपार बढ्यौ सुष, हरि सनमुष सबको हैं ॥
सबनि मानि मन मुदित हिये में, पिय रस रास रच्यो हैं ।
दंपति अंतर सजि ग्रीवा भुज, भौंह भ्रकुटि थिरको हैं ॥
नैंन नैंन मिलि लैंन बिछेपन, मैंन की सैंन मिलो हैं ।
श्रीभट अटकि रहे जित के तित, निज-निज लगनि लगो हैं॥२३॥

* दोहा *

सब मिलि निरपत नवल छबि, गोपी मँडलाकार ।
बीच जुगल सरसावहीं, अति रुचि सरद बिहार ॥

पद—(राग-केदारौ, इकताल)

अति रुचि पावत सरद बिहार ।
बीच जुगल सोहैं मन मोहैं, गोपी मंडलाकार ॥
षडज जमावैं सरस बतावैं, सब मिली[2] जुगल बिहार ।
श्रीभट नवल नागरी-नागर, ततथेइ[3] करत उचार ॥२४॥

* दोहा *

कीरति कूँपि जु कुमुदनी, सकै बास को जान ।
श्रीभट भानुकुमारि कौ, रसवर्धन यह मान ॥

पद—(राग-केदारौ, इकताल)

रस वर्धन यह मान कुँवरि कौ ।
कीरति कूँपि कुमुदनी जाकी,
सकै बास को जानि कुँवरि कौ ॥

पाठान्तर—१. धरि, धरत २. मिलि गावैं ३. तातथेइ ।

मधुर वस्तु ज्यौं खात निरंतर,
होत महा सुपदानि कुँवरि कौ।
बिच-बिच कटुकादिक जै श्रीभट,
अति रुचिदायक भानु कुँवरि कौ ॥२५॥

* दोहा *

एक समै श्रीराधिका, कृष्ण-कांति परकास।
आन तिया तट जानिकैं, मान कियौ रस रास॥

पद—(राग-बिहागरौ, इकताल)

रसिकनी मान कियौ रस-रास।
एक समै पिय-तन में अपनौ, निज प्रतिबिंब प्रकास॥
यह संभ्रम उपजायौ उर में, पर तिय कोउ पास।
जै श्रीभट हठ हरि सों करि रहि, नागरि निपट उदास॥२६॥

* दोहा *

भामिनि तौ जु सुभाव की, कछु गति समझी हौं न।
पिय तोकौं सर्बस दियौ, कियौ मान विधि कौंन॥

पद—(राग-बिलावल, इकताल)

मान अवसान कछू नहिं, भामिनि कैसे कीनौं।
नंदलाल गोपाल ने, तोहि सर्बस दीनौं॥
अबलौं कछु न दुरावती, कहि का रँग भीनौं।
कह्यौ श्रीभट कोमल कुँवरि[1], सहचरि सौं मीनौं॥२७॥

* दोहा *

भामिनि कोमल कमल से, पाँयनि चलि आयौ जु।
राधे नैंक निहारि करि, पिय कौं हिय भायौ जु॥

पाठान्तर—१. कुँवर।

पद—(राग-बिलावल, इकताल)

राधे नैंक निहारि करि, पिय कौ हिय भायौ ।
प्रीतम नंदकिसोर बिनु, कौने सचुपायौ ॥
भामिनि कोमल कमल से, पाँयनि चलि आयौ ।
श्रीभट घूँघट तट लषै, बसु नेह बिकायौ ॥२८॥

* दोहा *

मन बच क्रम दुर्गम सदा, ताहि ब चरन छुवात ।
राधे तेरे प्रेम की, कहि आवत नहिं बात ॥

पद—(राग-बिलावल, इकताल)

राधे तेरे प्रेम की कापै कहि आवै ।
तेरी-सी गोपाल की, तोपै बनि आवै ।
मन बच क्रम दुर्गम किसोर, ताहि चरन छुवावै ॥
श्रीभट मति वृषभानुजे, परताप[1] जनावै ॥२९॥

* दोहा *

स्याम बतायौ नैंन में, रही समुझि सुकुँवारि ।
चरन लग्यौ जब कह्यौ तब, हरषी लाल निहारि ॥

पद—(राग-सोरठा, इकताल)

राधे नंदनंदन सौं नेह ।
लसि रह्यौ स्याम नैंनन में तेरे, कहा करिहै दुरि गेह ॥
कुँवरि कुँवर तौ चरन लागि रहे, निरषि रूप सुष देह[2] ।
जावक अंकित लषि जै श्रीभट, भई कुँवरि हरि प्रेह ॥३०॥

* दोहा *

जड़ जुवती ज्यौं जिन करै, होइ बड़ैती बाल ।
हठ तजि सजि पहिराऊँगी, फूलन की उर माल ॥

पाठान्तर—१. जु प्रताप २. निरषि रु देषि सु देह, निरषि देषि सुष देह ।

पद—(राग-बिलावल, इकताल)

फूल माल उर मेलि हौं, चलि अलक लड़ैती ।
जड़ जुवती ज्यौं जिन करै, इत चितै हँसैती ॥
कह्यौ काहु कौ मानिये, जिन होउ बड़ैती ।
श्रीभट अलि कल सुनि कुँवरि, हरि मिली हठैती ॥३१॥

* दोहा *

हिय के हित साधे सबै, बाँधे लट आधे जु ।
नैंन धरे फल आजु ही, पाये हरि राधे जु ॥

पद—(राग-बिहागरौ, इकताल)

नैंन धरे फल आजु ही, पायौ हरि राधे ।
तिरछी चितवनि कान्ह की, परि रूप अगाधे ॥
निरपि - निरपि बीची झकोर, हिय के हित साधे ।
श्रीभट लपि छवि लाडिली, बाँधे लट आधे ॥३२॥

* दोहा *

जाकौं निरखत नैंक जब, हरयौ मानिनी मान ।
मदन-सदन जानी जु मैं, अपियाँ स्याम सुजान ॥

पद—(राग-केदारौ, इकताल)

मैं जानी जु मदन-सदन, मोहन जू की अपियाँ ।
निरपत मान हरयौ मानिनि कौ, हारि रहीं सब सपियाँ ॥
कोइ इक चितवनि चितै कुँवरि तन, इन या मन की लपियाँ ।
श्रीभट अटक छुटी पट अंतर, मंद-मंद हँसि मुपियाँ ॥३३॥

* दोहा *

कुंज महल दंपति मिले, भये मनोरथ मोर ।
आई सौंन मनाय हौं, निरपौं नवल किसोर ॥

पद—(राग-बिहागरौ, इकताल)

बन्यौ नीकौ राधाकृष्ण मिलौनौं।
दंपति कुंज महल में राजैं, मनु करि आन्यौ गौनौं॥
भये मनोरथ मेरे बाँछे, आछे करि आई ही सौंनौं।
श्रीभट निरषिहरष भयौ हियमें, बिहरत लाल लड़ैती दौनौं॥३४॥

* दोहा *

तेरी अरु इनकी जु ए, एक मती सब बात।
हौं न पत्याऊँ बहुरि हठि, अब पाई हरि घात॥

पद—(राग-बिहागरौ, इकताल)

राधे अब पाई हरि घतियाँ।
नंदलाल गोपाल की तेरी, सब बातें इक मतियाँ॥
हरि देषे बिन छिन न रहि परै, प्रगट भई हित जतियाँ।
कहैं श्रीभट बहुरि जो हठिहौ, हौं न आनिहौं पतियाँ॥३५॥

* दोहा *

रसिकराज ब्रजराज सुत, अति अलबेलौ लाल।
दान केलि मिस रस चषत, श्रीभट श्रीगोपाल॥

पद—(राग-बिलावल, इकताल)

रसिक सिरोमनि लाडिलौ, माँगै गोरस बाँह पसार री।
लाल लकुट आड़ी दिये प्यारौ, करि-करि बहु लड़कार री॥
तर ऊपर नषसिष अवलोकत, करत बहुत परकार री।
कहैं श्रीभट नटवर रस लंपट, प्रिया तन हाथ न डार री॥३६॥

॥ इति श्रीआदिवाणी युगलशतक व्रजलीला-सुख सम्पूर्णम् ॥

* श्रीसेवा-सुख *

* दोहा *

मेरेइ आँगन सेज पै, अरस-परस सुकुँवार ।
करत सहज सुष सौं सने, स्यामा-स्याम विहार ॥

पद—(राग-बिलावल, इकताल)

स्यामा-स्याम सेज उठि बैठे,
अरस-परस दोउ करत सिंगार ।
उन पहिरी वाकी मोतिन माला,
उन पहरयौ वाकौ नव सर हार ॥
लटपट पेंच सँवारति स्यामा,
अलक सँवारत नंदकुमार ।
श्रीभट जुगल किसोर की जुटी,[1]
मेरेइ आँगन करत विहार ॥३७॥

* दोहा *

षिसि-षिसि सिर तें परत पट, ससि बदनी जुव जाल ।
उठत भोर सँग लाल के, कसति कंचुकी बाल ॥

पद—(रास-बिभास, ताल-चम्पक)

उठत भोर लालजू के सँग तैं,
कंचुकि कसति राधिका प्यारी ।
षिसि-षिसि परत नील पट सिर तैं,
ससि बदनी नव जौवन वारी ॥
मन भावती लाल गिरिधर (जू) की,
रची बिधाता सुहथ सँवारी ।

पाठान्तर—१. जोड़ी, जूटी, जोरी ।

जै श्रीभट्ट सुरत-रँग भीने,
लषे प्रिया जुत कुंज बिहारी ॥३८॥

* दोहा *

निरषि हिताई दुहुँन की, हाव भाव हिय धारि ।
सजि आरति वारति सबै, प्रात[1] मुदित सहचारि ॥

पद—(राग-बिलावल[2], इकताल)

प्रात[1] मुदित मिलि मंगल गावैं, लाल लड़ैती कौं सखी लड़ावैं ।
रहसि जु केलि कही हिय भाई, राधामाधव अधिक हिताई ।
प्रेम संभ्रम के बचन सुनावैं, सुंदरि हरि मुष दरसन पावैं ।
बाल बिसाल कमल दल नैंनी, स्यामा-स्याम परम सुष दैनी ।
जै-जै सुर कहि ताल बजावैं, गीत बाद्य सों चाल मिलावैं ।
हिय में हाव-भाव लिये थारा, रति घृत जोति रु बाति बिहारा ।
तन-मन मुक्ता चौक पुरावैं, आरति श्रीभट अमिट[3] प्रचावैं ॥३९॥*

* दोहा *

कनक आरती मनि मई, अधिकई बनिक बिधान ।
वारि निहारौं नैंन भरि, मुष धरि मेवा पान ॥

पद—(राग-बिहागरौ, इकताल)

मंगल कनक आरती मनिमय, गौर स्याम छबि ऊपर वारौं ।
दोऊ बने नागरी नागर, कौन-कौन की ओर निहारौं ॥
पंजन मीन चपल सारँग से, मोहन नैंन देषि हौं चारौं ।
मेवा पान षवाय जै श्रीभट, करि दंडौत चँवर लै ढारौं ॥४०॥

पाठान्तर—१. साँझ २. गौड़ी ३. अमित ।

* विशेष—आ० पोठ सलेमाबाद की प्रति सं० १८३६ में यह पद ४८ नं० पर संध्या-आरती के समय राग गौरी में है, तथा प्रात की जगह साँझ पाठ है ।

* दोहा *

बिनै करत पाऊँ जु मैं, नाऊँ चरननि माथ ।
देह धरे कौ यहै फल, हितू जिमाऊँ हाथ ॥

पद—(राग-पंचम, ताल-चम्पक)

मिलि भोजन स्यामा-स्याम करत,
कर गरसा हँसत रस बतियाँ करैं ।
पीय कहत हितु हाथ जिमाऊँ,
इतनोहुँ फल पाऊँ देह धरैं ॥
करत बिनै नैंननि सों मोहन,
आनन-सुधा कर-परस डरैं ।
श्रीभट नेह की घटी अटपटी,
सैन बैन सों पैयाँ परैं ॥४१॥

* दोहा *

छपन छत्तीसौं रस छहौं, चतुर बिधा बहु पुंज ।
नंदनँदन वृषभानुजा, भोजन करत निकुंज ॥

पद–(राग-सारंग, इकताल)

भोजन करत निकुंज बिहारी ।
नंदनँदन वृषभानुनंदिनी, जग बंदन सुषकारी ॥
पाँय धुवाय बिछौने लौने, पिय प्यारी बैठारी ।
आय धरे सुथरे जुग आगर, चारु थार भरि झारी ॥
लगिय जु सहचरि सामाँ पुरसन, चुरसन रस बिस्तारी ।
भक्ष्यरु भोज्य लेह्य अरु चोष्य, चतुर बिध सनिधि सुधारी ॥
भात बहुत भाँतिन बिंजन गन, आनि धरे परसारी ।

ओदन महामोदन परसी, सरसी फुलका ललकारी ॥
घी गायौ तायौ ततकाली, बेली धरयौ नितारी ।
दै घृत डोरा बूरा परसी, हरषी परसन हारी ॥
तरकन मरकन जीरा पीरा, परम वासना कारी ।
अद्रक अनेक प्रकार दार में, आमी निंबु चुसारी ॥
कढ़ी पकौरी मूँग मुँगौरी, किये निमौंना न्यारी ।
भाजी साजी केंती मेथी, चना लुना चौरारी ॥
मिरचि चरचि कुलथी बथुआ, अथवा सब साग सँवारी ।
सैंजन फली कली कचनारी, सैंगरि स्वाद खटारी ॥
अरई तुरई केला करैला, कटहर बड़हर ग्वारी ।
प्रतिकाली कुंभल रु कचालू, नवला रस चँवलारी ॥
बागन बन के सबै बनाये, जितेक बिंजन कारी ।
रंग रँगे जेवें जबही तब, रीझि रहे पिय प्यारी ॥
राम चकर सिखरन कर पूरन, छनिवर मठा धुँगारी ।
थुलिया मिलन मिले जा संगा, अंगा खोभ खुभारी ॥
बहुरि दुपरती गरती घी की, नीकी पाक निकारी ।
मैदा पूप अनूप गुलगुला, नवला अन्न प्रचारी ॥
पुरी कचौरी खीर सुसीरा, थर मिस्री ककरारी ।
मोहन भोग मनोहर गुटका, अटका दूध दूधारी ॥
चक्का फैनी रुचनी माखन, सक्करपार सुहारी ।
लडुआ मुठिया अँदरसा खाजे, गूँझे मगद कसारी ॥
सेव उपरेठा पेठा पापर, बर चटनी रुचिकारी ।

गुना पचन सब वचन कटाछिन, बेसन चारु बड़ारी ॥
तर तूँबा ते किते रायते, पते बहुत परकारी ।
काँजी साजी सुंदर फिरि फिरि, पावें भावें भारी ॥
पेरा सेव जलेबी खुरमा, मोतीचूर गुँजारी ।
खुहा फुलौरे कंद गिंदौरे, नुकती रवा रुचारी ॥
रामचने आचार अंबिया, कैर निंबू लहसारी ।
घिरमिर मुरबा अँवरा पचनी, रस दमनी अमलारी ॥
सरबत छना पना अनवानी, मिरचि बनी सुपखारी ।
भोजन छपन छतीसौं विंजन, सबै सजे त्यौंनारी ॥
हठि हरिप्यारी हारि रहे तब, बनि आई ज्यौंनारी ।
(जै) श्रीभट झटपट खरिका दीनें, अचवन पान-सुपारी ॥

* दोहा *

जो जन गावें जुगल के, आगैं यह ज्यौंनार ।
कृपा करैं दोउ लाडिले, यहै सत्य निरधार ॥४२॥

* दोहा *

हँसत जात जल लेत मुष, रसवत वितरत खयाल ।
गहि झारी कर आचमन, करत लाडिली लाल ॥

पद (राग-सारंग, इकताल)

अँचवन करत लाडिली लाल ।
कंचन झारी गहत परसपर, श्रीराधा गोपाल ॥
जल मुष लेतहि हँसत हँसावत, देषत सषिन के जाल ।
(श्री) राधामाधव षेलत रत भये[1], श्रीभट परत विचाल ॥४३॥

पाठान्तर—१. रति भये ।

* दोहा *

लै कर बीरी पिय प्रिया, बदन मनोहर देत ।
लेत नाहिं जब लाडिली, बिनै करत सुष हेत ॥

पद—(राग-सारंग, इकताल)

प्यारीजू कौं बीरी पवावत मोहना ।
सुंदर मुष सुष देखबौ चाहत, नंदनँदन पिय सोहना ॥
जदपि न लेत लड़ैती कर तें, बिनै करत परि गोहना ।
श्रीभट निपट दीन तन देखबौ, मुसकि दियौ मुष टोहना ॥४४॥

* दोहा *

सरद रैन गिरि नील मनु, घन चपला सनमान ।
अपने श्री गोपाल कौं, प्रिया पवावति पान ॥

पद—(राग-सारंग, इकताल)

गोपालजू कौं पान पवावति भामिनी ।
परम प्रिया गुन रूप अगाधा, श्रीराधा निज नामिनी ॥
कर अँकमाल पीक मुष लसहीं, बिलसहिं ज्यौं घन दामिनी ।
जै श्रीभट्ट कूट मरकत तट, षिली सरद मनु जामिनी ॥४५॥

* दोहा *

गौर स्याम अति सोहनी, जोरी परम उदार ।
अलिजन आरति करत हैं, छबिहि निहार-निहार ॥

पद—(राग-सारंग, इकताल)

आरति करत अली छबि निरषैं ।
नवलकिसोर जोरि सुष बरषैं ॥
प्यारी मुष लसि ससि पंडित सुष ।
कान्हर सिर सिषंड मंडित मुष ॥

कुंडल जुगल कपोलनि राजैं ।
मुष-सुषमा अति ईछन आजैं ॥
सीपज सिरज उज्जल कल केलैं ।
नील पीतपट घन रुचि पेलैं ॥
गौर-स्याम मूरति रस रंजैं ।
बाहु बिसाल ब्याल उर गंजैं ॥
नंद सुवन वृषभानु की तनया ।
श्रीभट जोट अघट सुठि बनया ॥४६॥

* दोहा *

मधि दिन कमलन दलनि सौं, रची सैन निज हाथ ।
लता भवन प्रिया-रवन मिलि, बिलसत दोऊ साथ ॥

पद—(राग-सारंग, चौताल)

लता भवन प्रिया-रवन सँग मिलि, बिलसत रुचि सौं चैन ।
मधि दिन फूले कमल-दलनि सौं, रचि निज सुकरनि सैन ॥
सघन बिपिन जु ऐन आनँद कौ, देषि परत नहिं गैन ।
श्रीभट देषि देषि दोउन तन, सुफल करत हौं नैन ॥४७॥

* दोहा *

मिस्री फोरी कबहि ते, रही बाट बहु हेरि ।
ब्यारू की बलि बेर अहु, कीजै नाहिं अबेर ॥

पद—(राग-केदारौ, ताल-चम्पक)

ब्यारू की बेर अबेर न कीजै, लीजै बलि जाऊँ थर थोरी ।
कबकी बाट देषि नँदनंदन, मैं तब ही तें मिस्री फोरी ॥

हठ न करौ बैठौ चौकी पै, संग लियैं राधा गोरी ।
(जै) श्रीभट जुटि बैठे दोऊ तन, देषि जिवैं जुग जीवौ जोरी ॥४८॥

* दोहा *

न्यारी धेनु दुहायकैं, ल्याई तट औटाय ।
नटौ न बलि पीवौ दोऊ, दूधहिं मधुरे भाय ॥

पद—(राग-केदारौ, इकताल)

पीवौ दोउ दूध मधुरे भाय ।
अधिक औटयौ तट नटौ ना, मेवा मिस्री मिलाय ॥
कनक जटित सुमनि कटोरै, न्यारी धेनु दुहाय ।
बेगि पीवौ बलि कान्ह किसोरी, बहुरि जैहै सिराय ॥
थार थर धरि ब्यारू समये, रस रमै रुचि पाय ।
बेला लै लै पीवं पिवावैं, हँसैं हँसावैं बुलाय ॥
पयहि पीवत हितू कुतूहल, बाढयौ बिलँब लगाय ।
लेहु बीरी कमल लोचन, जै श्रीभट बलि जाय ॥४९॥

* दोहा *

ढारौं निज कर चँवर लै, धारौं नैंननि नेह ।
सोवत जुगल किसोर जहँ, सेऊँ चरन सुदेह ॥

पद—(राग-बिहागरौ, इकताल)

सोवत जुगल चँवर हौं ढारौं ।
कबहुँक सेऊँ चरन नैंननि में, नौतन नेह सुधा रस धारौं ॥
कबहुँक पद पल्लव राधे के, अपने नैंन कनीन निसारौं ।
कबहुँक श्रीभट नंदलाल के, कोमल चरन कमल पुचकारौं ॥५०॥

* दोहा *

सोभा निधि सुष सिद्धि रिधि, राधाधव को धाम ।
जहँ हितु हित सज्या सजी, श्रीभट निज कर स्याम ॥

पद—(राग-सारंग, इकताल)

निज कर अपने स्याम सँवारी ।
सुषद सेज राधाधव मंदिर, सोभा निधि रिधि सिद्धि महारी ॥
हितु के हेत हरषि सुंदर वर, अतिहि अनूप रची रुचिकारी ।
जै श्रीभट्ट करत परिचर्जा, रिझवन[1] प्रान बल्लभा प्यारी ॥५१॥

* दोहा *

मेरे मन के सुफल सब, भये मनोरथ पुंज ।
दुरि देषौं पौढ़े दोऊ, मंगल महल निकुंज ॥

पद—(राग-बिहागरौ, ताल-चम्पक)

कुंज महल आज मंगल होरी ।
किसलै दल कुसुमनि की सज्या, तापै बिछई पीत पिछौरी ॥
भये मनोरथ मेरे मन के, सजि दंपति पौढ़े इक ठौरी ।
नैंन ओट ह्वै श्रीभट देषत, क्रीडा करत किसोर किसोरी ॥५२॥

पाठान्तर—१. रिझवत ।

॥ इति श्रीआदिवाणी युगलशतक सेवा-सुख सम्पूर्णम् ॥

* श्रीसहज-सुख *

* दोहा *

अंग-अंग दुति माधुरी, विवि मुप चंद चकोर ।
श्रीभट सुघट दृष्टिन अटक, नटवर नवल किसोर ॥

पद—(राग-रामकली, इकताल)

बसौ मेरे नैंनन में दोउ चंद ।
गौर बरन बृषभानुनंदिनी, स्याम बरन नँदनंद ॥
गोलक रहे लुभाय रूप में, निरषत आनँद कंद ।
जै श्रीभट्ट प्रेम रस बंधन, क्यों छूटै दृढ़ फंद ॥५३॥

* दोहा *

जोरी गोरी स्याम कोउ, थोरी रचि न बनाय ।
प्रतिबिंबित तन परस्पर, श्रीभट उलटि लषाय ॥

पद (राग-केदारौ, इकताल)

राधामाधव राजै धाम ।
अरस परस ऐसें प्रतिबिंबित,
स्याम स्यामा मनु स्यामा स्याम ॥
चकित चच्छु निज छवि अवलोकत,
गौर स्याम मिलि भइ अरुनाई ।
जैसें मुप आये दरपन तट,
तुरत तिही छिन रंग पलटाई ॥
अंगनि अंग अभंग रही छवि,
छाय समीप भयौ जो जाकी ।

जै श्रीभट्ट निकट देखत दुति,
नंदनँदन वृषभानुसुता की ॥५४॥

* दोहा *

प्रेम कला सुर सहित पिय, कहत प्रिया सौं बैंन ।
हार उदार निहार उर, चहत चतुर चित लैंन ॥

पद—(राग-गौरी, इकताल)

परस्पर निरषि थकित भये नैंन ।
प्रेम कला भरि सुर राधे सौं, बोलत अमृत बैन ॥
हार उदार तिहार निहारौ, राधे यह मन लैंन ।
श्रीभट लटक जानि हितकारिनि, भई स्याम सुष दैंन ॥५५॥

* दोहा *

सुमन सहित आवृत अमल, जामधि निज प्रतिबिंब ।
देषि दिपावत जमुन तट, अति उत्कट अविलंब ॥

पद—(राग-गौरी, तिताल)

मंजु कुंज द्वारैं प्रिया प्रीतम,
मिलि बठे जमुना के तीर ।
गहवर कुसुम तरंग संग सौं,
सीतल मंद सुगंध समीर ॥
सुमन सहित चक्राकृत आवृत,
अद्भुत देषि दिपावत नीर ।
श्रीभट अति उत्कट तट राजैं,
स्यामा-स्याम छवि जलधि गँभीर ॥५६॥

* दोहा *

सुकर मुकुर निरपत दोऊ, मुषससि नैंन चकोर ।
गौर-स्याम अभिराम अति, छवि न फबी कछु थोर ॥

पद–(राग-कान्हरौ, तिताल)

गौर-स्याम अभिराम विराजैं ।
अति उमंग अँग अंग भरे रँग,
सुकर मुकुर निरपत नहिं त्याजैं ॥
गंड सों गंड बाहु ग्रीवा मिलि,
प्रतिबिंबित तन उपमा लाजैं ।
नैंन चकोर बिलोकि बदन ससि,
आनँद सिंधु मगन भये भ्राजैं ॥
नील निचोल पीत पट कैं तट,
मोहन मुकुट मनोहर राजैं ।
घटा छटा आषंडल कोदँड,
दोउ तन एक देस छबि छाजैं ॥
गावत सहित मिलत गति प्यारी,
मोहन मुष मुरली सुर बाजैं ।
श्रीभट अटकि परे दंपति दृग,
मूरति मनहुँ एक ही साजैं ॥५७॥

* दोहा *

भुवन चतुर्दस की सबै, सुंदरता सिरमौर ।
सुंदर बर जोरी बनी, बृन्दाबन निज ठौर ॥

पद—(राग-केदारौ, तिताल)

वृन्दावन इक सुंदर जोरी ।
षेलत जहाँ तहाँ बंशीवट, नंदनँदन वृषभानु किसोरी ॥
भुवन चतुर्दस की सुंदरता, सुंदर स्याम राधिका गोरी ।
जै श्रीभट्ट कहाँ लौं वरनौं, रसना एक नाहिं लष कोरी ॥५८॥

* दोहा *

नषसिष सुषमा के दोउ, रतनागर रसिकेस ।
अद्भुत राधामाधवौ, जोरी सहज सुदेस ॥

पद—(राग-केदारौ, तिताल)

राधामाधव अद्भुत जोरी ।
सदा सनातन इक रस बिहरत,
अविचल नवल किसोर-किसोरी ॥
नष सिष सब सुषमा रतनागर,
भरत रसिकवर हृदय सरोरी ।
जै श्रीभट्ट कटक कर कुंडल,
गंड वलय मिलि लसत हिलोरी ॥५९॥

* दोहा *

दरपन में प्रतिबिंब ज्यौं, नैंन जु नैंनन माहिं ।
यों प्यारी पिय पलक हू, न्यारे नहिं दरसाहिं ॥

पद—(राग-केदारौ, तिताल)

प्यारी तन स्याम स्यामा तन प्यारौ ।
प्रतिबिंबित तन अरस परस दोउ,
एक पलक दिषियत नहिं न्यारौ ॥

ज्यों दरपन में नैंन नैंन में,
नैंन सहित दरपन दिषवारौ ।
श्रीभट जोट की अति छबि ऊपर,
तन मन धन नवछावरि डारौ ॥६०॥

* दोहा *

वृन्दावन फुलवारि में, पहरि फूल उरमाल ।
विहरत श्रीवृषभानुजा, नंदनँदन गोपाल ॥

पद—(राग-बिलावल, तिताल)

नंदनँदन गोपाललाल वृषभानु दुलारी ।
विहरत वृन्दाबिपिन में, अति प्रीतम प्यारी ॥
कर सपरस परसन्न होत, तैसिय फुलवारी ।
(जै) श्रीभट स्वग दीनी सँवारि, हरि प्रिया उर धारी ॥६१॥

* दोहा *

चंचल चिकने लगौं हैं, अरुन बरन रस अैन ।
अनियारे अति नागरी, नागर के ए नैंन ॥

पद—(राग-काफी, तिताल)

नागरी नागर के नैंन अनियारे ।
अति अनूप निज रूप निहारे,
परम प्रान प्रिय प्रीतम प्यारे ॥
भृकुटि मरोरनि गूढ़ भाव सौं,
डोरा कोर प्रेम फँदवारे ।
अरुन बरन पैने रस भीने,
चिकने लगौं हैं प्रीति पन पारे ॥

पलक ललक मनौ अलिन नलिन पै,
प्रात मुदित हित पंख पसारे ।
अंजन अमिल रेष ईषद लसि,
बसि नागिनि मनु खंजन गारे ॥
चंचल कमल ललित प्रफुलित मन,
भूतल गति निरषत रस भारे ।
श्रीभट सुरत समर में कोविद,
सुभट कोटि कंद्रप इहाँ वारे ॥६२॥

* दोहा *

लोचन स्याम सुधीर के, मोचन विरह बिसाल ।
बिन ही अंजन ये अहो, खंजन लोचन बाल ॥

पद—(राग-चर्चरी, तिताल)

लड़ैतीजू के खंजन लोचना ।
बिनहीं अंजन दिये बिहारी, बिरह बिथा उर मोचना ॥
चपल चाल लालै अवलोकत, रूप लुभाय संकोचना ।
श्रीभट सुघर सुधीर स्याम कौ, करत निरंतर रोचना ॥६३॥

* दोहा *

रस बस ह्वै सरबस दियौ, लषि पिय स्याम सुजान ।
अंजन पंजन नैंन मनु, धरे कटारे सान ॥

पद—(राग-बिलावल, तिताल)

अंजन पंजन नैंन में, लषि नंद दुलारे ।
राधे रस बस साँवरे, सरबस दियौ प्यारे ॥
मैन सैन रन करन कों, सान धरे कटारे ।
श्रीभट स्याम सुख दैन कों, स्यामा सचि धारे ॥६४॥

* दोहा *

राधे तेरे रूप की, पटतर कहिये काहि ।
सरवस तजि रसवस भये, नैंन कोर तन चाहि ॥

पद—(राग-रायसो, ताल-चम्पक)

नैंक नैंन की कोर मोरि, मोहन बस कीनें ।
राधे तेरे रूप की, पटतर को दीनें ॥
कमल कोस अलि ज्यौं, चलैं तारे रँग भीनें ।
श्रीभट तन अंजन छुवै, लालन लव लीनें ॥६५॥

* दोहा *

जित-जित भामिनि पग धरै, तित-तित भावत लाल ।
करत पलक निज पाँवड़े, रूप विमोहित बाल ॥

पद—(राग-बिलावल, तिताल)

प्यारीजू के प्यारो रूप विमोहित ।
करत पलक पाँवड़े बिहारी, धरत चरन भामिनी जित ॥
यहै प्रीति परतीति निरंतर, दयौ वारि सब चित-वित ।
जै श्रीभट्ट प्रेम बस प्रीतम, निस बासर जानै कित ॥६६॥

* दोहा *

साँवर ससि सँग लसि प्रिया, भरी सरस रस छंद ।
डोलत हैं श्रीराधिका, अति ही आजु आनंद ॥

पद—(राग-केदारो, ताल-यात्रा)

श्रीराधिका आजु आनंद में डोलै ।
साँवरे चंद गोविंद के रस भरी,
दूसरी कोकिला मधुर सुर बोलै ॥

पहरि पट नीलवर कनक हीरावली,
हाथ लिये आरसी रूप तोलै ।
कहैं श्रीभट्ट आजु नागरि नीकी बनी,
कृष्ण के सील की ग्रंथि खोलै ॥६७॥

* दोहा *

प्रीति रीति रस बस भये, जदपि मनोहर मैन ।
तदपि रटैं निज मुष सदा, राधे-राधे बैन ॥

पद—(राग-केदारो, ताल-चम्पक)

मोहन राधे-राधे बैन बोलैं ।
प्रीति रीति रस बस नागरि, हरि लियौ प्रेम के मोलैं ॥
हास बिलास रास राधे सँग, सील आपनौ तोलैं ।
श्रीभट जदपि मदन मोहन तउ, हारि-हारि सिर डोलैं ॥६८॥

* दोहा *

गहि मुरली गोपाल की, लीनी प्रिया प्रवीन ।
अटके ऐंचत परसपर, हरि बहु करत अधीन ॥

पद—(राग-रायसो, ताल-चम्पक)

मुरली श्रीगोपाल की, ललना गहि लीनी ।
मंजु जुगल अँजुलीन[1] की, पंगति दुति दीनी ॥
नील मनिन कंचन खचित, रंजित मनु कीनी ।
श्रीभट ऐंचत परसपर, हरि करत अधीनी ॥६९॥

* दोहा *

चकित नैंन लषि बैंन भये, व्याकुल अति ही स्याम ।
हँसी सषी की ओट ह्वै, स्याना सब सुष धाम ॥

पाठान्तर—१. अगुलीन ।

पद—(राग-कान्हरौ, तिताल)

स्यामा मदन मोहन की हरि लई बंसी।
चकित नैंन बैंन व्याकुल लषि, सषी ओट दै हंसी॥
इक सषी नैंन सैंन समुझाये, प्यारी परम प्रसंसी।
श्रीभट मुकुट लटक चरननि तट, करत हैं रसिक वतंसी॥७०॥

* दोहा *

बिन दामन लियो मोल हौं, करहु जो भावै सोहि।
अहो राधे बिनती करौं, मुरली दीजै मोहि॥

पद—(राग-केदारौ, इकताल)

राधे बिनै करत मोहि मुरली दीजै।
बिनु दामन मनु मोल लियो हौं, जो भावै सो कीजै॥
सैन पान सब सुधि बिसराई, इतनी करुना लीजै।
श्रीभट सुघर किसोर-किसोरी, अरस-परस रँग भीजै॥७१॥

* दोहा *

कुहुकालस जुत लाल के, ललिता भृकुटि चलाय।
दये बताय जब लाडिली, दई माल मन भाय॥

पद–(राग-केदारौ, तिताल)

कुहुकालस जुत मदन गोपाल।
वृन्दावन नव कुंज सदन में,
बिहरत मन रंजन नँदलाल॥
भृकुटि चलाय बतायो ललिता,
देषि दई दयिता उर माल।

श्रीभट संपुट करि हरि नाचे,
मुदित किहुँ न लोचन जु विसाल ॥७२॥

* दोहा *

कुँवरिकिसोरी नागरी, मोहि दीजै निज हार ।
तुम करि औरै लीजियै, बहु फूली फुलवार ॥

पद—(राग-बिहागरो, इकताल)

बहु फूली फुलवारि ये दीजै निज हार ।
उरझ्यौ मोतिन माल में, हौं लेऊँ सुरझार ॥
कुँवरि किसोरी नागरी, सषी और सँवार ।
श्रीभट निपट लट्टू लष्यौ, कहि लेहु उतार ॥७३॥

॥ इति श्रीआदिवाणी युगलशतक सहज-सुख सम्पूर्णम् ॥

* श्रीसुरत-सुख *

* दोहा *

उझकति सहचरि निरखि सुष, हिय में भरी हुलास ।
नव निकुंज रस पुंज छवि, स्यामा स्याम निवास ॥

पद—(राग-बिहागरौ, इकताल)

नव निकुंज में पुंज सषिन के, तिन में स्यामा स्याम विराजैं ।
सीतल मंद सुगंध त्रिविध, मारुत सेवत रितुराजैं ॥
उझकति जित-तित लता सुपिर सषि, हिये हुलासी साजैं ।
अंतर रह्यौ न दंपति श्रीभट, देषि भये सब काजैं ॥७४॥

* दोहा *

बहु भतियाँ फूल्यौ विपिन, रतियाँ सरद सुहात ।
बतियाँ भाँवति करत उर, छतियाँ अंक लिपात ॥

पद—(राग-बिहागरौ, ताल-चम्पक)

दोउ मिलि करत भाँवती बतियाँ ।
मदन गोपाल कुँवरि राधे के,
नषमनि अंक लिपत उर छतियाँ ॥
तैसिय छिटक रही उजियारी,
पूरन चंद सरद की रतियाँ ।
केलि रूपिनी जमुना श्रीभट,
वृन्दावन फूल्यौ बहु भतियाँ ॥७५॥

* दोहा *

कबहुँक लै निज करनि में, लावत नैंन बिसाल ।
प्रानप्रिया मन हरनि के, चरन पलोटत लाल ॥

पद—(राग-बिहागरौ, इकताल)

प्यारीजू के चरन पलोटत मोहन ।
नील कमल के दलन लपेटे, अरुन कमल दल सोहन ॥
कबहुँक लै लै नैंन लगावत, अलि धावत ज्यौं[1] गोहन ।
जै श्रीभट्ट छबीली राधे, होत जगे ते छोहन ॥७६॥

* दोहा *

प्यारी प्रीतम परस्पर, रच्यौ[2] रंग अनुराग ।
अधर सुधा रस देत हैं, लेत स्याम बड़भाग ॥

पद—(राग-बिहागरौ, इकताल)

श्रीवृन्दाबिपिनेस्वरी, रस सिन्धु बिहारी ।
रच्यौ परस्पर प्रेम छेम, बाढ़्यौ अति भारी ॥
अरप्यौ पिय हिय पाय कै, निज अधर सुधारी ।
श्रीभट बड़भागी गुपाल, पीयौ रुचिकारी ॥७७॥

* दोहा *

हित बावरि नित[3] कुंज में, राधामाधव केलि ।
श्रीभट निपट हितकारिनी, हरषि[4] निरषि रस रेलि ॥

पद—राग-बिहागरौ, तिताल)

रस की रेलि बेलि अति बाढ़ी ।
दंपति की हित बावरि बिहरनि,
रहौ सदा मेरे चित चाढ़ी ॥
निरषत रहौं निपट हितकारिनि,
पिय-प्यारी की गुन गति गाढ़ी ।

पाठान्तर—१. मनु, मानौ २. रच्यौ अंग ३. निज ४. हरषि ।

जै श्रीभट उत्कट संघट सुष,
केलि सहेलि निरंतर ठाढ़ी ॥७८॥

* दोहा *

बाल बाहु बर लाल की, किय किंदुक हिय हेत ।
घन स्यामल के हेत मनु, दामिनि सी छबि देत ॥

पद—(राग-केदारौ, तिताल)

कीनें सचु स्याम स्यामा सैंन ।
ऐसे लसैं अँग राग कोविद, वदत ईषद बैंन ॥
बाल लाल बर बाहु किंदुक, कियें दिये हिय हेत ।
स्याम घन तन दामिनी बनि, भामिनी छबि देत ॥
गोबिंद दयिता सुरत सज्जित, श्रीभट पट संभीर ।
प्रिया फबि मनु कोर ससि की, दबी घन गंभीर ॥७९॥

* दोहा *

दोउन दृग मृगराज ज्यौं, गति मति रहे भूल ।
श्रीभट बरबट ह्वै लटू, निरषत आनँद मूल ॥

पद—(राग-मारू, इकताल)

प्रिया मुष सुषमा देषि कैं, मोहे कुंज बिहारी ।
अधर मधुर पर पीक लीक सी, कसी सुधारी ॥
प्रनै कोप दृग रोपिकैं, कोर सों निहारी ।
जै श्रीभट घटना देषिकैं, जाऊँ बलिहारी ॥८०॥

* दोहा *

अहु राधे वृषभानु की, कुँवरि किसोरी बाल ।
थोरी बै भोरीहि में, मोहे मोहन लाल ॥

पद—(राग-बिहागरौ, इकताल)

जै जै श्रीवृषभानु किसोरी ।
राजत रसिक अंक अंकित सी, लसी स्याम संग गोरी ॥
जै-जै राधे रूप अगाधे, चितै चारु चित चोरी ।
श्रीभट नटवर रूप सुंदर वर, मोहे तैं थोरी वै भोरी ॥८१॥

॥ इति श्रीआदिवाणी युगलशतक श्रीसुरत-सुख सम्पूर्णम् ॥

ॐ श्रीउत्सव-सुख ॐ

(बसन्त)

ॐ दोहा ॐ

मंगल बिमली सबहि मिलि, षेलौ हिय हुलसंत ।
मान बिरह दुष मेटनौं, आयौ रितुराज बसंत ॥

पद—(राग-बसंत, इकताल)

आयौ रितुराज बसंत हित भयौ हिय कौ ।
अब मिलि मंगल बिमली षेलौ, मान बिरह गयौ जिय कौ ॥
चित में चाह उछाव बढ़ावौ, सहज संग भयौ पिय कौ ।
श्रीभट कूट कोप करि नागरि, दीप जरायौ घिय कौ ॥८२॥

ॐ दोहा ॐ

नव किसोर नव नागरी, नव सब सौंजरु साज ।
नव बृन्दावन नव कुसुम, नव बसंत रितुराज ॥

पद—(राग-बसंत, इकताल)

नवल बसंत नवल श्रीबृन्दावन, नवलहि फूले फूल ।
नवलहि कान्ह नवल सब गोपी, निरतत एकै तूल ॥
नवलहि साषि जवादि कुंकुमा, नवलहि बसन अमूल ।
नवलहि छींट बनी केसर की, मेंटत मनमथ सूल ॥
नवल गुलाल उड़ै रंग बूका, नवल पवन कै झूल ।
नवलहि बाजे बाजत श्रीभट, कालिन्दी के कूल ॥८३॥

ॐ दोहा ॐ

हरष्यौ सुत ब्रजराज कौ, निरषि बसंत रितुराज ।
श्रीभट अटक कछू नहीं, करि हैं मन के काज ॥

पद—(राग-वसंत, इकताल)

आज मन कारज करिये री।
हरष्यौ सुत व्रजपति कौ अति ही, लषि चषि ढरिये री॥
रितु कौ राज बसंत निरषि, सोइ सुष उर धरिये री।
श्रीभट अटक नहीं अब तनकहु, महामुद[1] भरिये री॥८४॥

(होरी)

* दोहा *

बिविधि भाँति सब सौंज सजि, सुषद सरोवर रूप।
हो हो होरी षेलहीं, स्यामा स्याम अनूप॥

पद—(राग-होरी, इकताल)

हो हो होरी षेलैं स्यामा-स्याम।
सषि रूप सरोवर गुन के ग्राम॥
जहँ आई कुँवरि चलि अलि लै पुंज।
तहँ आय मिले मोहन निकुंज॥
राधे भुजा पसारि गुलाल मेलि।
बनि घन समेत मनो तडित केलि॥
रंग ढोरि कमोरी झमकि झिंव।
नीलांबर मानौ चपला बिंब॥
भरि चरच्यौ रंग गोकुल सुचंद।
करभनि सुकेलि मनु मद गयंद॥
रंग भीजि चीर लगे अंग-अंग।
लषि नंदनंदन मन भयौ पंग॥

पाठान्तर—१. महामुदित (मन) भरिये री।

वृषभानु कुँवरि डारयौ अबीर।
मरकत मनि मानौ सिंच्यौ षीर॥
नव रंग बूका उडयौ गुलाल।
वय संधि जलद मनौ चंदमाल॥
गारी गावैं गोपी पीयूष बैन।
सोइ सुनत स्यामजू के हिय में चैन॥
पिचकारी भरि रंग राधे ओर।
छवि पर वारौं परजन्य कोर॥
सौरभ सुगंध केसर के नीर।
आनंद कंद मलय[1] समीर॥
बनमालि वल्लविनु गहे आय।
मनौ कोटि तडित घन लपटि जाय॥
सषि लेहु री याकौं भलें नचाय।
फिर नहिंन पाय है ऐसौ दाय॥
(रँग) ढोरि कमोरी स्यामा दई सिपाय।
मुष लेपन करि दिये छुड़ाय॥
सब हँसीं लसीं कर देय ताल।
कहि ऊँचे सुर हारे गुपाल॥
हरि बीच नच्यौ मच्यौ कीच रंग।
सरसै ज्यौं मेघ पै सोम संग॥
मिलि चंद्रमुषिन तोषे हरि चकोर।
दिवि कनक मोरनि मधि मनहु मोर॥
रंग डारि गारि दै भजे जु भाल।

पाठान्तर—१. मलये।

सु समान समर जैसे परत चाल ॥
फिर लई गुपाल पिचकारी हाथ ।
घनतेव निकसि ज्यौं तडित जात ॥
बर भ्रमत भ्रमर ब्रजराजलाल ।
फूलीं कुमुदनी मानौ गोप बाल ॥
बहु चूका उडयौ रँग अंध ऊथ ।
तहँ अटक्यौ आय गोपिन कौ जूथ ॥
फिरि करि गोपाल गुलाल पेलि ।
करि लयौ बराबरि बहुरि षेलि ॥
ब्रजराज कुँवर सौं षेलैं फाग ।
फूली कुमुदनी ज्यौं झरि पराग ॥
नित अभंग केलि हित हिय में राग ।
कहें कमला सी ये धनि सुहाग ॥
फाग षेलि चलीं गावत जु बाद ।
देषत श्रीभट केसौ प्रसाद ॥८५॥

(जल-केलि)

* दोहा *

तरनि हथारनि प्रिया कौं, सिषवत पिय सुषसार ।
रचि लीला रुचि कारिनी, षेलहिं वारि विहार ॥

पद—(राग-सारंग, इकताल)

षेलैं वारि बिहार बिहारनी ।
रचि रंजन मंजन मिस लीला, रसिक लाल रुचिकारनी ॥
जमुन तरंग रहसि रस पूरन, अंगन अंसुक हारनी ।
श्रीभट नट नागर प्यारी कौं, सिषवत तरन हथारनी ॥८६॥

* दोहा *

मेलत कलिका कमल की, झेलत झुकि रस झेलि ।
राजत अति जल जान पै, करत जुगल जल केलि ॥

पद—(राग-सारंग, इकताल)

जल केलि करत रस कंदनी ।
राजमान जलजान उपर दोउ, कान्ह भानु की नंदनी ॥
कलिका नवल कमल की मेलत, झेलत सरस सुगंधनी ।
श्रीभट जानै कौन रसिक दोउ, डारत नेह रस फंदनी ॥८७॥

(वर्षाऋतु-विहार)

* दोहा *

ठाढ़े गाढ़े कुंज तर, बाढ़े मैन मरोर ।
भींजत कब इन दृगन ते, देखौं जुगल किसोर ॥

पद—(राग-मल्हार, इकताल)

भींजत कब देखौं इन नैंना ।
स्यामाजू की सुरँग चूँनरी, मोहन कौ उपरैंना ॥
जुगलकिसोर कुंज तर ठाढ़े, जतन कियौ कछु मैंना ।
उमगी घटा चहुँ दिस श्रीभट, जुरि आई जल सैंना ॥८८॥

* दोहा *

बसन भीजिहैं भामिनी, छिनकि निवारौ मेह ।
मोहि सहित लायक तुमहिं, छता हमारौ एह ॥

पद—(राग-मल्हार, इकताल)

श्रीराधेजू सुंदर छता हमारौ ।
मोहि सहित श्रीस्यामा लायक, बन्यौ जु बनिक विचारौ ॥
भीजैगे जु बसन-तन भामिनि, छिन इक मेह निवारौ ।
श्रीभट हठ न कियौ हित जान्यौ, आनि गह्यौ हिय प्यारौ ॥८६॥

* दोहा *

जमुना जल में निरषहीं, झुकि चंचल निज झाँहि ।
दोउ जन ठाढ़े लपटि उर, एकहि पुहिया माँहि ॥

(पद—राग-मल्हार, तिताल)

ठाढ़े दोउ एकै पुहिया माँहि ।
बंसीबट तट जमुना जल में, निरषत चंचल झाँहीं ॥
कारी कमरिया अंतर दंपति, स्यामा-स्याम लपटाहीं ।
श्रीभट कृष्ण कूट में कंचन, जल बरषत झलकाहीं ॥६०॥

* दोहा *

ज्यौं ज्यौं चूनरि सगवगी, त्यौं त्यौं लावत हीय ।
भीजत कुंजन ते दोऊ, आवत प्यारी पीय ॥

पद—(राग-मल्हार, तिताल)

भीजत कुंजन ते दोउ आवत ।
ज्यौं ज्यौं बूँद परत चूनरि पै, त्यौं त्यौं हरि उर लावत ॥
अति गंभीर झीने मेघन की, द्रुम तर छिन विरमावत ।
जै श्रीभट्ट रसिक रस लंपट, हिलमिल हिय सचुपावत ॥६१॥

(हिंडोरा)

* दोहा *

वटि जुटि दुहुँ ओरैं दोऊ, तन घन दामिनि भोर ।
फूल फबे उर झूलहीं, लाडिली लाल हिंडोर ॥

पद—(राग-मल्हार, इकताल)

झूलत लाडिलीलाल हिंडोरैं ।
फूल फबे अँग अंगनि सब सषि, बटि जुटि दोउ दुहुँ ओरैं ॥
खंभ अधारक डोल अमोलक, नवल पाट की डोरैं ।
जामें नवल किसोर-किसोरी, अपनी अपनी छोरैं ॥
कारी घटा छटानि के डोरा, मोरा बोलत जोरैं ।
कोकिला सुर कल जल कन वरषत, थिर गंभीर घन घोरैं ।
सबै ओर सुंदर तें सुंदर, बनी सषिन की कोरैं ।
देषि दंपती झूलैं[1] भूलैं, दामिनी घन भोरैं ॥
सनमुष बैठे उभै कुँवरि हरि, गावं सषि सुर थोरैं ।
स्यामा-स्याम सषी सुषकारी, झूलत सहज झकोरैं ॥
जित जित झुलत डुलत तितही तित, सषी दृगन कों मोरैं ।
तन मन दै तनमै भई दयिता, दामोदर चित चोरैं ॥
रजु भुज गहैं लहैं चित ईछति, रती असित तन गोरैं ।
जै श्रीभट बंसीवट तट निरषत, उठि उर हरष हिलोरैं ॥९२॥

* दोहा *

जमुना बंसीवट निकट, हरन हिंडोरै हीय ।
रंगदेव्यादि झुलावहीं, झूलत प्यारी पीय ॥

पद—(राग-मल्हार, इकताल)

हिंडोरैं झूलत हैं पिय प्यारी ।
श्रीरंगदेवि सुदेवि बिसाषा, झोटा देत ललितारी ॥
श्रीजमुना बंसीवट के तट, सुभग भूमि हरियारी ।
तैसेइ दादुर मोर करत धुनि, सुनि मन हरत महारी ॥

पाठान्तर—१. झूलें फूलें, झूल फूलें ।

घन गरजनि दामिनि तें डरि पिय, हिय लपटी सुकुँवारी ।
जै श्रीभट्ट निरषि दंपति छबि, देत अपनपौ वारी ॥९३॥

(पवित्रा)

* दोहा *

कान्ह प्रान के त्रान हित, जसुमति गरग बुलाय ।
कह्यौ पवित्रा दाम रचि, पहिरावहु रिषिराय ॥

पद–(राग-मल्हार, इकताल)

पवित्रा पहिरैं कुँवर कन्हाई ।
अति अभिराम दाम मनु दामिनि, घन स्यामै लपटाई ॥
पवित्रेस के प्रान-त्रान हित, जानि जतन जसुमाई ।
भक्ति भाव सनमान सहित जब, लीने गरग बुलाई ॥
तुम हमरे घर के जु पुरोहित, लगौं तिहारे पाँई ।
यह बालक चमकै न चपल तें, सोई करौ उपाई ॥
सावन सुकल पच्छ एकादसि, गोप मिले सब आई ।
बोले गरग बिचार मंत्र तुम, सुनौ भले नँदराई ॥
पचरँग पाट की दाम रचावौ, नाना रतन लगाई ।
आगम निगम मंत्र सौं नीके, रच्छा करौ बनाई ॥
सुने बचन आचारज के, ब्रजराज सोई करवाई ।
मंत्र पवित्रा स्याम दाम गर, गरग दई पहिराई ॥
मानौ घन थिर कीनी दामिनि, सोभा लगत सुहाई ।
बाढ्यौ मंगल सब ब्रजपुर में, श्रीभट भई मनभाई ॥९४॥

(लालजू की बधाई)

* दोहा *

भागवती जसुमति अति, भई प्रफुलित लषि लाल ।
गोकुल मंगल आज लषि, बाढ्यौ बिसद बिसाल ॥

पद—(बधाई, इकताल)

गोकुल मंगल आजु बधाई ।
रानी जसुमति के प्रगटे हैं, सुंदर कुँवर कन्हाई ॥
गोपी ओपी थार लिये कर, रवि छवि देषि लजाई ।
गावत धावत अति छवि पावत, सूरति लगत सुहाई ॥
देषि देषि मुष स्यामसुंदर कौ, अँग अंगनि सचुपाई ।
भागवती जसुमति रानी अति, सुत जायौ सुषदाई ॥
निरतत कीरति मुषिया निज मुष, कहि कहि बहुत बड़ाई ।
ब्रजरानी मनमानी तैसें, जो जैसें मनभाई ॥
नंदसदन में दूध दही की, मची कीच अधिकाई ।
गोपी गोप ग्वालगन अनगिन, आनँद मगन महाई ॥
भाग सराहत ब्रजरानी के, भाषत भूप भलाई ।
कहत आज हम ब्रजवासिन की, सकल आस पुरवाई
जग वंदन नँदनंदन जायौ, सुष छायौ ब्रजआई ।
जै श्रीभट्ट रसिक भक्तन मन, भई महा मुदिताई ॥८५॥

(प्रियाजू की बधाई)

* दोहा *

ब्रजजन गोपी गोपगन, नंदादिक मनमोद ।
सुनत जनम राधा चले, मिलि बरसाने कोद ॥

पद—(बधाई, इकताल)

आज ब्रजजन मिलि मंगल गावं ।
गोपी गोप भाग कीरति के, गाय गाय प्रगटावैं ॥
प्रगटी श्रीराधा रूप अगाधा, सब सुष साधा नावैं ।
मिलि आये नंदादिक सबही, प्रेम परसपर भावैं ॥

कोइक गावें कोई बजावें, कोई दही लै धावें ।
आय आय बरसाने बीथिन, जै जैकार करावें ॥
भानु नंद सौं मिले धाय कें, अंक सों अंक लगावें ।
श्रीभट निकट निहारि राधिका, स्याम नेन सचु पावें ॥९६॥

(रास)

* दोहा *

मोहन बन जन माल पै, मधुकर करत गुँजार ।
श्रीभट लटक सुवासना, अटके नंदकुमार ॥

पद—(राग-केदारो, ताल-यात्रा)

राजई समाज आज मधुप ज्यौं मुकुंद चंद ।
उद्यत उरोज ब्रज सुंदरी सरोज वृंद ॥
जटित फटिक मनि धरासर विविध विद्रुम वीचिका वर,
वलित राग वल्लवी कुच चक्रवाक विहग द्वंद।
गोपी मंडल कमल माल धमिल पलित ते सिवाल,
नाल जानु वय समान तन सुपान स्वेदबिंद ॥
नवल बालिका अनूप लावनि गुन गन सरूप,
दल विकास विमल तास सुद्ध प्रेमता सुगंध ।
गंभीर धीर गान गुंज भ्रमर नृत्त करत मंजु,
तान मान देत लेत सरस मुष सुधा सुकंद ॥
चीर उड़नि कृष्ण स्याम स्रग तैं बैजंति दाम,
जुगल मिलन पटक चलन अरुनता प्रिया स्कंद ।
स्वेद प्राग पतित पंक उन्नता हरि वदन टंक,
जात जल सुजीव गहन फूल माल वेलि वंद ॥

कर्निका जुग करन तूल बहुल कंठ सीस फूल,
जलज हमेल बीच रेल रज सिंदूर झलक संद।
मधुरद मकरंद अधर केसर आनंद कंद,
(जै) श्रीभट लपटानि रुचिर नीलांबर पीत फंद॥६७॥

* दोहा *

कर बर अंबुज कंठ भुज, मरकत कनक स्थूल।
श्रीभट रसमय तट रमत, राधा मन अनुकूल॥

पद—(राग-केदारो, इकताल)

फूली कुमुदनी सरद सुहाई।
जमुना तीर धीर दोउ बिहरत,
कमल नील-पीत कर माई॥
नील बरन स्यामा रुचि कीनी,
अरुन बरनता हरि मन भाई।
श्रीभट लपटि रहे अंसन कर,
मानौ मरकत कनक जराई।६८॥

(ब्याह)

* दोहा *

बेदी पुलिन बिराजहीं, मंडप बेलि तमाल।
नच्यौ किधौं यह रच्यौ है, ब्याह बिहारीलाल॥

पद—(राग-मारू, इकताल)

श्रीब्रजराज के जुवराज मानौ,
ब्याह वृन्दावन रच्यौ।
पुलिन बेदी बिराजै दंपति,
देषि देषि सषि मन सच्यौ॥

ह्वै पुरोहित रिचा उचारत,
वेलि तमाल मंडप पच्यौ ।
जै श्रीभट भाँवरि परत नटवर,
अंकमाल प्रिया संग नच्यौ ॥९९॥

* दोहा *

तिहि[1] छिन की बलि जाऊँ सषि, जिहि[2] छिन भाँवरि लेत ।
लाल बिहारी साँवरो, गौर बिहारिनि हेत ॥

पद—(राग-बिहागरौ, ताल-चम्पक)

जैसिय बिहारिनि गौर बिहारीलाल साँवरे ।
तिहि[1] छिन की बलि जाऊँ सषीरी, परत जिहि[2] छिन भाँवरे ॥
कंचन मनि मरकत मनि प्रगटी, बरसाने नंद गाँव रे ।
विधिना रचित न होय जै श्रीभट, राधामोहन नाँव रे ॥१००॥

* दोहा *

श्रीभट प्रगटत जुगलसत, पढ़ै कंठ तिहुकाल ।
जुगल केलि अवलोक तें, मिटै विषै जंजाल ॥

पाठान्तर—१. जिहि २. तिहि ।

॥ इति श्रीआदिवाणी युगलशतक (श्रीउत्सव-सुख) सम्पूर्णम् ॥

अतिरिक्त पद

❀ पद ❀

हे निम्बार्क दीन बंधु सुन पुकार मेरी ।
पतितन में पतित नाथ सरन आयौ तेरी ॥
मात तात भगिनी भ्रात परिजन समुदाई ।
सबही संबंध त्याग आयौ सरनाई ॥
काम क्रोध लोभ मोह दावानल भारी ।
निसदिन हौं जरौं नाथ लीजियै उबारी ॥
अंबरीष भक्तजानि रच्छा करि धाई ।
तैसेई निजदास जानि राषौ सरनाई ॥
भक्तबछल नाम नाथ वेदनि में गायौ ।
श्रीभट तव चरन परसि अभैदान पायौ ॥१॥

❀ पद ❀

मंगल मूरति नियमानंद ।
मंगल जुगलकिसोर हंस वपु, श्रीसनकादिक आनंद कंद ॥
मंगल श्रीनारद मुनि मुनिवर, मंगल निंब दिवाकर चंद ।
मंगल श्रीललितादि सषीगन, हंस बंस संतन के वृंद ॥
मंगल श्रीवृन्दावन जमुना, तट बंसीवट निकट अनंद ।
मंगल नाम जपत जै श्रीभट, कटत अनेक जनम के फंद ॥२॥

❀ पद ❀

रे मन वृन्दाविपिन निहार ।
जद्यपि मिलै कोटि चिंतामनि, तदपि न हाथ पसार ॥
विपिनराज सीमा के बाहिर, हरिहू कों न निहार ।
जै श्रीभट्ट धूरि धूसर तन, यह आसा उर धार ॥३॥